

**BRAHMAVART P.G. COLLEGE, MANDHANA
KANPUR NAGAR**

प्रश्नBANK

**FOR CSJM UNIVERSITY'S
ODD SEMESTER EXAMINATION**

B.A.V SEM (Hindi)

Paper-II^{end}

हिंदी का राष्ट्रीय काव्य

(A010502T)

**50+SHORT ANSWER QUESTIONS
Brief and Intensive Notes**

Dr. Amit Kumar Dubey
Department of Hindi, Brahmavart P.G. College,
Kanpur
&
Priyanka Kamal
Research Scholar U.G.C. NET & J.R.F.

बी. ए. पंचम सेमेस्टर
वषय- हिन्दी
द्वितीय प्रश्नपत्र
हिन्दी का राष्ट्रीय काव्य
(A010502T)

प्रश्न-1 पृथ्वीराज रासो के सत्ताइसवें सर्ग 'रेवा तट समय' का सारांश लिखिए।

अथवा

'रेवा तट समय' सर्ग की कथा का वर्णन कीजिए।

उत्तर - 'रेवा तट अंश' पृथ्वीराज रासो का अंश है जिसकी रचना चंदबरदाई ने की थी। कहा जाता है कि चन्दबरदाई पृथ्वीराज का सखा, सामंत, राजमन्त्री था। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अर्द्ध प्रामाणिक मानते हुए इसके उसी अंश को प्रामाणिक माना है जिसका प्रारम्भ शुक शुकी संवाद से हुआ है। उनका प्रमुख तर्क यह है कि आदिकाल में प्रचलित संवाद शैली में ही पृथ्वीराज रासो की रचना हुई है। इस आधार पर वे केवल 7 सर्गों को ही प्रामाणिक मानते हैं जिसमें रेवातट समय नहीं है।

इस सम्बन्ध में उनका मत है कि सभी ऐतिहासिक कहे जाने वाले काव्यों के समान इसमें भी तथ्य और कथ्य का मिश्रण है। इसके कथानक में भी रूढ़ियों का सहारा लिया गया है। इसमें भी रस सृष्टि की ओर ध्यान दिया गया है। कवि की कल्पना का समावेश भी है। रेवातट समय में पृथ्वीराज ने रेवा नदी के तट पर जो भयानक युद्ध मोहम्मद गोरी से किया उसका वर्णन है।

'पृथ्वीराज रासो में 69 समय (सर्ग) हैं। 'रेवा तट' समय पृथ्वीराज रासो का सत्ताइसवाँ समय (सर्ग) है। इसमें दिल्ली के महान राजा पृथ्वीराज चौहान तथा शहाबुद्दीन गोरी के रेवा तट पर होने वाले संघर्ष का वर्णन है। जब शहाबुद्दीन को अपने गुप्तचरों द्वारा ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज चौहान रेवा (नर्मदा तट के समीप वन आखेट में रत हैं, तो वह अपनी सेना सहित पृथ्वीराज पर आक्रमण कर देता है, परन्तु पृथ्वीराज चौहान शीघ्र ही मोर्चा संभाल लेते हैं और उसकी सेना को छिन्न-भिन्न करके उसे बन्दी बना लेते हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत सर्ग में युद्ध का वर्णन है, इसलिए कुछ विद्वान इस अंश के नामकरण 'रेवा तट' पर आपत्ति उठाते हैं, लेकिन इस सर्ग में वर्णित पृथ्वीराज चौहान का रेवा तट के समीप किसी वन में आखेटरत होना तथा शहाबुद्दीन के आक्रमण करने पर उत्साह के साथ उस पर पलटवार करना आदि घटनाएँ इस

शंका का निराकरण कर देती है।

'रेवा तट' की सर्ग की कथा

पृथ्वीराज चौहान के सेनापति चामण्ड राय देवगिरि को जीतने के बाद कवियों ने पृथ्वीराज चौहान की कीर्ति का बखान किया। एक दिन चामण्ड राय ने पृथ्वीराज से कहा कि रेवा (नर्मदा नदी के तट पर ऐरावत हाथी के समान बहुत से हाथी पाये जाते हैं। अतः आप रेवा तट पर शिकार खेलने चलें, तभी पृथ्वीराज चौहान ने कवि चन्द से पूछा कि ये देवताओं के वाहन पृथ्वी पर कैसे आ गए। कवि चन्दबरदाई ने उत्तर दिया कि हे महाराज ! हिमालय के पास एक बहुत बड़ा वट वृक्ष था, जोकि सौ योजन तक फैला था। एक दिन हाथियों ने विचरण करते हुए उस वृक्ष की शाखाएँ तोड़ी और ऋषि दीर्घतपा का आश्रम उजाड़ डाला। इस बात से क्रोधित होकर ऋषि ने मदान्ध हाथियों को श्राप दे दिया। इस कारण हाथी तब से गतिविहीन हो गए। तब मनुष्यों ने उन्हें अपनी सवारी बना लिया। कवि चन्द ने आगे बताया कि अंगदेश के एक वन में लोहिताक्ष सरोवर पर उन श्रापित हाथियों का झुण्ड - क्रीड़ा करता था।

उसी वन में पालकाव्य ऋषि रहते थे, जिनकी हाथियों से अत्यन्त प्रीति थी। राजा पृथ्वीराज ने पूछा कि हे कविराज ! उन ऋषि की हाथियों से इतनी प्रीति का कारण क्या था? कवि ने बताया कि एक बार ब्रह्मर्षि को घोर तपस्या में रत देखकर देवराज इन्द्र डर गए और उनकी तपस्या को भंग करने के उद्देश्य से उन्होंने रम्भा (अप्सरा) को ऋषि के पास भेजा। ऋषि ने क्रोधित होकर रम्भा को हथिनी होने का श्राप दे दिया। एक दिन सोते हुए एक मुनि का वीर्यपात हो गया, जिसे हथिनी ने खा लिया और पालकाव्य मुनि का जन्म हुआ। पालकाव्य मुनि इसी कारण हाथियों से प्रीति रखते थे।

पालकाव्य ऋषि और वे श्रापित हाथी एक-दूसरे से बड़ी प्रीति रखते थे। एक दिन उस वन में राजा रोमपाद शिकार खेलने आया और हाथियों को पकड़कर चम्पापुरी ले गया। हाथी पालकाव्य से बिछुड़ने के कारण दुर्बल होते चले गए, उनकी दीर्घकाय शरीर कृशकाय हो गए फिर पालकाव्य ऋषि वहाँ आए और उनकी काफी सेवा सुश्रूषा की। कोंपल, पराग, पत्ते, छाल, शाखाएँ आदि खिलाकर ऋषि ने उन्हें स्वस्थ कर दिया, जिससे सभी हाथी पुनः हृष्ट-पुष्ट हो गए।

कवि चन्द का हाथियों के विषय में यह वृत्तान्त सुनकर राजा पृथ्वीराज को बड़ा हर्ष हुआ, तभी चामण्ड राय ने पृथ्वीराज से कहा कि हे राजन्! रेवा तट पर बड़े दाँतों वाले हाथियों के साथ-साथ मार्ग में सिंह भी मिलेंगे। आप उनका भी शिकार कर सकते हैं। चामण्ड राय ने आगे कहा कि वहाँ पहाड़ों और जलाशयों पर कस्तूरी मृग, कबूतर व अन्य पक्षी भी रहते हैं और दक्षिण दिशा का सौन्दर्य तो और भी अवर्णनीय है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने सोचा कि मेरे वहाँ जाने से जयचन्द को तो ईर्ष्या होगी, साथ ही स्थान भी रमणीक है। अतः चौहान ने रेवा तट की ओर प्रस्थान कर दिया।

वहाँ के सभी राजाओं ने पृथ्वीराज का स्वागत किया और पृथ्वीराज ने भी वहाँ खूब शिकार का आनन्द लिया। उसी समय लाहौर के शासक चन्द पुण्डीर दाहिम का पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि शहाबुद्दीन गोरी ने चौहान पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना तैयार की है। चन्द पुण्डीर के पत्र को पढ़कर चौहान लाहौर की ओर चल दिए। पृथ्वीराज ने

सभी सामन्तों से मन्त्रणा करके गोरी से युद्ध की घोषणा कर दी। चन्द पुण्डीर ने अपनी सेना को लाहौर में गोरी की सेना को रोकने के लिए सावधान कर दिया। गोरी ने चिनाब नदी को पार किया, जहाँ उसका मुकाबला चन्द पुण्डीर से हुआ। चन्द पुण्डीर ने अपने पाँच वीरों के मरते ही गोरी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, तभी चौहान के दूतों ने उसे बताया कि तातार मारुफ खाँ (गोरी का प्रधान सेनापति) लाहौर से केवल पाँच कोस दूरी पर ही है। यह सुनकर पृथ्वीराज ने गोरी की सेना पर आक्रमण कर दिया।

नगाड़ों के बजते ही हाथियों के घण्टे घनघना गए। चौहान की सेना के लोहे के बाणों को देखकर गोरी की सेना घबरा गई। दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गई। चौहान पक्ष के साथ-साथ गोरी पक्ष के भी अनेक वीर योद्धा मारे गए। रावर, सँभरसिंह, सोलंकी माधवराय, गरुअ गोइंद, पतंग-जयसिंह, चन्द पुण्डीर, कूरम्भ, आहुटु, लखन, लोहाना आदि बहुत से वीर मारे गए। चार दिन तक युद्ध निरन्तर चलता रहा। चौथे दिन चौहान के एक योद्धा गुज्जर ने गोरी को पकड़ लिया। सुल्तान गोरी को हाथी पर बाँधकर दिल्ली ले गया।

वह एक माह और तीन दिन पृथ्वीराज की कैद में रहा। शहाबुद्दीन के अमीरों ने पृथ्वीराज से गोरी को छोड़ने की विनती की और दण्डस्वरूप नौ हजार घोड़े, सात सौ ऐराकी घोड़े, आठ सफेद

हाथी, बीस ढली हुई ढालें, गजमुक्ता और अनेक माणिक्य दिए। तत्पश्चात् पृथ्वीराज चौहान ने गोरी से सन्धि कर ली और पहिना-ओढ़ाकर उसे उसके घर भज दिया। यही रेवा तट' सर्ग की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रश्न-2 जगनिक के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर - महाकवि जगनिक महोबा के चन्देल राजा परमार्दिदेव (परमाल राज) के समकालीन थे। इनका जन्म 1195-1203 ई० के आस-पास जिझोतिय नामक परिवार में माना जाता है। इनका पूरा नाम जगनिक नायक था, इन्होंने परमाल के सामन्त और सहायक महोबा के आल्हा ऊदल को नायक 'मान' आल्हाखण्ड' नामक अमर लोककाव्य की रचना की।

जीवन वृत्त - ऐसा प्रसिद्ध है कि कालिंजर के राजा परमाल के यहाँ जगनिक नाम के एक भाट थे जिन्होंने महोबा के दो देश प्रसिद्ध वीरों आल्हा और ऊदल (उदयसिंह) के वीर चरित का विस्तृत वर्णन एक वीरगीतात्मक काव्य के रूप में लिखा था जो इतना सर्वप्रिय हुआ कि उसके वीरगीतों का प्रचार क्रमशः सारे उत्तरीय भारत में विशेषतः उन सब प्रदेशों में जो कन्नौज साम्राज्य के अन्तर्गत थे हो गया। जगनिक के काव्य का आज कहीं पता नहीं है पर उसके आधार पर प्रचलित गीत हिन्दी भाषा- 'भाषी प्रान्तों के 'गाँव गाँव' में सुनाई पड़ते हैं। ये गीत 'आल्हा' के नाम से प्रसिद्ध हैं और बरसात में गाए जाते हैं। गाँवों में जाकर देखिए तो मेघ गर्जन के बीच में किसी अल्हैत के ढोल के गम्भीर घोष के साथ यह वीर हुंकार सुनाई देगी नई कविताएं पढ़ें
बारह बरिस लै कूकर जीएँ,

और तेरह लै जिऐं सियार।
बरिस अठारह छत्री जीऐं,
आगे जीवन के धिक्कार।

साहित्य - इस प्रकार साहित्यिक रूप में न रहने पर भी जनता के कंठ में जगनिक के संगीत की वीरदर्पपूर्ण प्रतिध्वनि अनेक बल खाती हुई अब तक चली आ रही है। इस दीर्घ काल-यात्रा में उसका बहुत कुछ कलेवर बदल गया है। देश और काल के अनुसार भाषा में ही परिवर्तन नहीं हुआ है, वस्तु में भी अधिक परिवर्तन होता आया है। बहुत से नए अस्त्रों (जैसे-बंदूक, किरिच), देशों और जातियों (जैसे-फिरंगी) के नाम सम्मिलित हो गए हैं और बराबर होते जाते हैं। यदि यह ग्रन्थ साहित्यिक प्रबन्ध पद्धति पर लिखा गया होता तो कहीं न कहीं राजकीय पुस्तकालयों में इसकी कोई प्रति रक्षित मिलती। पर यह गाने के लिए ही रचा गया था इससे पण्डितों और विद्वानों के हाथ इसकी रक्षा की ओर नहीं बढ़े, जनता ही के बीच इसकी गूँज बनी रही पर यह गूँज मात्र है, मूल शब्द नहीं। आल्हा का प्रचार यों तो सारे उत्तर भारत में है पर बैसवाड़ा इसका केन्द्र माना जाता है; वहाँ इसके गाने वाले भी बहुत अधिक मिलते हैं। बुंदेलखण्ड में विशेषतः महोबे के आस-पास भी इसका चलन बहुत है।

इन गीतों के समुच्चय को सर्वसाधारण 'आल्हा-खण्ड' कहते हैं जिससे अनुमान होता है कि आल्हा सम्बन्धी ये वीर-गीत जगनिक के रचे उस बड़े काव्य के एक खण्ड के अन्तर्गत थे जो चंदेलों की वीरता के वर्णन में लिखा गया होगा। आल्हा और ऊदल परमाल के सामंत थे और बनाफर शाखा के क्षत्रिय थे। इन गीतों का एक संग्रह 'आल्ह खण्ड' के नाम से छिपा है। फर्रुखाबाद के तत्कालीन कलेक्टर मि० चार्ल्स इलियट ने पहले पहल इन गीतों का संग्रह करके 60-70 वर्ष पूर्व छपवाया था।

विलक्षण कवि - जगनिक हिन्दी साहित्य के एक विलक्षण कवि है। 'लीक छोड़ तीन हिं चले, शायर, सिंह, सपूत के अनुरूप यह परम्परा का निर्वाह करते हुए भी परम्परा से हटकर तथा परम्परा से ऊपर है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल-क्रम की दृष्टि से वह आदिकाल, जिसे वीरगाथा काल अथवा चरण काल भी कहते हैं, का कवि है। उस कालखण्ड के कवि राज्याश्रित रहकर प्रायः अपने आश्रयदाता की प्रशस्ति में काव्य-रचना करते थे। सम्राट पृथ्वीराज चौहान का राजकवि चंदबरदाई उसकी प्रशस्ति में पृथ्वीराज रासो लिखता है तो अन्य अनेक कवि भी उसी परम्परा में हैं किन्तु जगनिक उस वीरगाथा की प्रशस्ति परम्परा का निर्वाह करने के साथ, परम्परा से हटकर अपने आश्रयदाता की प्रशस्ति में काव्य-रचना नहीं करता है; जबकि उसका आश्रयदाता यशस्वी चंदेल नरेश था जिसे 'महाराजाधिराज परम भट्टारक परमेश्वर परम माहेश्वर' की उपाधि प्राप्त थी तथा जिसकी प्रशंसा में लिखी गई अनेक कविताएँ हिन्दी तथा संस्कृत में, तत्कालीन अनेक शिलालेखों पर अंकित होकर इतिहास का अंग बन गई हैं। उसने उस युग के अपराजेय योद्धा आल्हा को चरित बनाकर महाकाव्य रचा था। वह आल्हा भी कोई क्षत्रिय वीर या राजकुमार नहीं, एक उपेक्षित जाति 'ओछी जाति बनाफर क्यार' का सामान्य वर्ग का निधि था। उसने आल्हा के सहयोगी पात्रों में उसके छोटे भाई ऊदल, मलखान, माहिलपुत्र

अभयी प्रदायिक सौहार्द के प्रतीक सैयद काका तथा प्रेरक महिला चरित्रों के रूप में मल्हाना, फुलवा, बेला, नमा एवं गजमोतिन का चयन एवं सृजन कर उनकी प्रशंसा की तथा यह संकेत दिया कि श्रेष्ठ समाज चयन एवं सृजन कर उनकी प्रशंसा की तथा यह संकेत दिया कि श्रेष्ठ समाज के निर्माण में मान्यजनों तथा महिलाओं की भी महती भूमिका है। उन्हें उसी रूप में साहित्य में प्रतिष्ठित किया जाना क्षित है। जगनिक की यह विशेषता उसे, अन्य राज्याश्रित कवियों की तुलना में, उच्च पद पर नष्ठित कर देती है जिसमें भूषण तथा लाल कवि भी उससे पीछे छूट जाते हैं। तब से आज तक वह ता के गलियारों में भटकने वाले चारण-साहित्यकारों के लिए चुनौती भी देती है, प्रेरणा स्रोत भी। र्य तथा श्रृंगार के इस अद्भुत लोकगायक जगनिक के आल्हा लोकमहाकाव्य की लोकप्रियता गाँवों और पड़ियों में रहने वाले निरक्षर-अनपढ़-सामान्यजन से लेकर देश-विदेश के साहित्य पारखियों तक है।

देशभक्ति भाव से ओत प्रोत- इनका साहित्य गाँवों कीचौपालों का श्रृंगार, गायकों का कंठहार देशप्रेम जगाने वालों को वाणी का ओजस्वी उपहार है। चंदेलकालीन इतिहास संस्कृति के विशेषज्ञ शव चंद मिश्र उसे 'लोककाव्य का नेता' तथा 'हिन्दी का आर्थर किंग' की संज्ञा से विभूषित करते हैं, लीफोर्निया विश्वविद्यालय का विदुषी प्रो० डॉ. कैरीन शोमर 'होमर' की श्रेणी में परिगणित करती हैं। नकी लोकप्रियता से प्रभावित चार्ल्स इलियट उसे प्रथम बार लिपिबद्ध कराकर 'अमरत्व' दिलाते हैं। तो ज्ञान-स्थान पर साहित्य के पथ-बिन्दु ढूँढ़ने वाले अनेक अंग्रेज साहित्यकार तथा इतिहासकार यथा जार्ज व्यर्सन, विसेंट स्मिथ, वाटरफील्ड उसके काव्य को अंग्रेजी में अनूदित कर सुप्रसारित पत्रिकाओं के ध्यम से उसे विश्व फलक पर प्रतिष्ठित करते हैं। फिलिप लुफांते (शिकागो विश्वविद्यालय) ने भी इस शोध कार्य करके उसे वैश्विक अध्येताओं की दृष्टि में उठाया। भारतीय विद्वान, विशेषकर हिन्दी हित्य के सभी इतिहास लेखक उसका यथेष्ट उल्लेख कर उस पर शोध कार्य करके उसे वैश्विक ध्येताओं की दृष्टि में उठाया। भारतीय विद्वान, विशेषकर हिन्दी साहित्य के सभी इतिहास लेखक उसका पेष्ट उल्लेख करते हैं। उस पर अनेक शोध कार्य भी हुए हैं। इनकी मृत्यु सन् 1203 ई० के आस-पास मानी जाती है।

प्रश्न-3 जगनिक कृत 'आल्हाखण्ड' का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - कालिंजर के राजा परमार के आश्रय में जगनिक नाम के एक कवि थे, जिन्होंने महोबे के दो सिद्ध वीरों 'आल्हा और ऊदल (उदयसिंह) के वीर चरित का विस्तृत वर्णन एक वीरगीतात्मक काव्य रूप में लिखा था जो इतना सर्वप्रिय हुआ कि उसके वीरगीतों का प्रचार क्रमशः सारे उत्तरीय भारत में शेषतः उन सब प्रदेशों में जो कन्नौज साम्राज्य के अन्तर्गत थे हो गया। जगनिक के काव्य का आज नहीं पता नहीं है पर उसके आधार पर प्रचलित गीत हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों के 'गाँव गाँव' में सुनाई देते हैं। ये गीत 'आल्हा' के नाम से प्रसिद्ध हैं और बरसात में गाए जाते हैं। गाँवों में जाकर देखिए तो घ गर्जन के बीच में किसी अल्हैत के ढोल के गम्भीर घोष के साथ यह वीर हुकार सुनाई देगी-

“बारह वरिस लै कूकर जीऐं,

और तेरह लै जिऐं सियार।
बरिस अठारह छत्री जीऐं,
आगे जीवन के धिक्कार।”

साहित्य - इस प्रकार साहित्यिक रूप में न रहने पर भी जनता के कंठ में जगनिक के संगीत की दर्पपूर्ण प्रतिध्वनि अनेक बल खाती हुई अब तक चली आ रही है। इस दीर्घ काल-यात्रा में उसका हुत कुछ कलेवर बदल गया है। देश और काल के अनुसार भाषा में ही परिवर्तन नहीं हुआ है, वस्तु में अधिक परिवर्तन होता आया है। बहुत से नए अस्त्रों (जैसे-बंदूक, किरिच), देशों और जातियों जैसे-फिरंगी) के नाम सम्मिलित हो गए हैं और बराबर होते जाते हैं। यदि यह ग्रन्थ साहित्यिक प्रबन्ध पद्धति पर लिखा गया होता तो कहीं न कहीं राजकीय पुस्तकालयों में इसकी कोई प्रति रक्षित मिलती। पर यह गाने के लिए ही रचा गया था इससे पण्डितों और विद्वानों के हाथ इसकी रक्षा की ओर नहीं बढ़े, जनता ही के बीच इसकी गूँज बनी रही पर यह गूँज मात्र है, मूल शब्द नहीं है। आल्हा का प्रचार यों तो सारे उत्तर भारत में है पर बैसवाड़ा इसका केन्द्र माना जाता है; वहाँ इसके गाने वाले भी बहुत अधिक मिलते हैं। बुंदेलखण्ड में विशेषतः महोबे के आस-पास भी इसका चलन बहुत है। आल्हा गाने वाले लोग अल्हैत कहलाते हैं।

इन गीतों के समुच्चय को सर्वसाधारण 'आल्हा-खण्ड' कहते हैं जिससे अनुमान होता है कि आल्हा सम्बन्धी ये वीर-गीत जगनिक के रचे उस बड़े काव्य के एक खण्ड के अन्तर्गत थे जो चंदेलों की वीरता के वर्णन में लिखा गया होगा। आल्हा और ऊदल परमार के सामंत थे और बनाफर शाखा के क्षत्रिय थे। इन गीतों का एक संग्रह 'आल्हाखण्ड' के नाम से छपा है। फर्रुखाबाद के तत्कालीन कलेक्टर मि० चार्ल्स इलियट ने पहले पहल इन गीतों का संग्रह करके छपवाया था। आल्हाखण्ड में तमाम लड़ाइयों का जिक्र है। शुरुआत मांडी की लड़ाई से है। मांडी के राजा करिंगान ने आल्हा ऊदल के पिता जच्छराज-बच्छराज को मरवा के उनकी खोपड़ियाँ कोल्हू में पिरवा दी थीं। उदल को जब यह बात पता चली तब उन्होंने अपने पिता की मौत का बदला लिया तब उनकी उम्र मात्र 12 वर्ष थी। आल्हाखण्ड में युद्ध में लड़ते हुए मर जाने को लगभग हर लड़ाई में महिमा मंडित किया गया है-

"मुर्चन मुर्चन नचै बुंदला उदल कहँ पुकारि-पुकारि,
भागि न जैयो कोऊ मोहरा ते यारों रखियो धर्म हमार
खटिया परिके जौ मरि जैहों, बुढ़िहै सात साख को नाम
रन मा मरिके जो मरि जैहो, होइहै जुगन-जुगन लौं नाम।"
अपने बैरी से बदला लेना सबसे अहम बात माना गया है-
'जिनके बैरी सम्मुख बैठे उनके जीवन को धिक्कार।'

इसी का अनुसरण करते हुए तमाम किस्से उत्तर भारत के बीहड़ इलाकों में हुए जिनमें लोगों ने आल्हा गाते हुए नरसंहार किये या अपने दुश्मनों को मौत के घाट उतारा। पुत्र का महत्व पता चला जब कहा जाता है-

"जिनके लड़िका समरथ हुड़गे उनका कौन पड़ी परवाह!"

स्वामी तथा मित्र के लिए कुर्बानी दे देना सहज गुण बताये गये हैं-

"जहाँ पसीना गिरै तुम्हारा तह दे देंऊं रक्त की धारा।"

आज्ञाकारिता तथा बड़े भाई का सम्मान करना का कई जगह बखान गया है। इक बार मेले में आल्हा के पुत्र इंदल का अपहरण हो जाता है। इंदल मेले में उदल के साथ गये थे। आल्हा ने गुस्से में उदल की बहुत पिटाई की-

"हरे बांस आल्हा मंगवाये औ उदल को मारन लाग।"

उदल चुपचाप मार खाते-बिना प्रतिरोध के। तब आल्हा की पत्नी ने आल्हा को रोकते हुए कहा-

"हम तुम रहिब जौ दुनिया में इंदल फेरि मिलेंगे आय

कोख को भाई तुम मारत ही ऐसी तुम्हहिं मुनासिब नाय।"

यद्यपि आल्हा में वीरता तथा अन्य तमाम बातों का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन है तथापि मौखिक परम्परा के महाकाव्य आल्हाखण्ड को वैशिष्ट्य बुन्देली का अपना है। महोबा 12वीं शती तक कला केन्द्र तो रहा है जिसकी चर्चा इस प्रबन्ध काव्य में है। इसकी प्रामाणिकता के लिए न तो अन्तःसाक्ष्य ही देय और न बहिःसाक्ष्य इतिहास में परमादेदेव की कथा कुछ दूसरे ही रूप में है परन्तु आल्हा खण्ड- राजा परमाल एक वैभवशाली राजा है। आल्हा और उदल उसके सामन्त हैं। यह प्रबन्ध काव्य स्त कमजोरियों के बावजूद बुन्देलों जन सामान्य की नीति और कर्तव्य का पाठ सिखाता है। देलखण्ड के प्रत्येक गाँवों में घनघोर वर्षा के दिन आल्हा जमता है।

"भरी दुपहरी सरवन गाइये, सोरठ गाइये आधी रात।

आल्हा पवाड़ा वादिन गाइये, जा दिन झड़ी लगे दिन राता"

आल्हा भले ही मौखिक परम्परा से आया है, पर बुन्देली संस्कृति और बोली का प्रथम काव्य है, जगनिक इसके रचयिता है। भाषा काव्य में बुन्देली बोली का उत्तम महाकाव्य स्वीकार या जाना चाहिए। बुन्देली बोली और उसके साहित्य का समृद्ध इतिहास है और भाषा काव्यकाल में की कोई भी लिखित कृति उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न-4 'आल्हा' की कथा का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर - आल्हा का जन्म जेठ दशहरा के पुण्य दिवस पर महाराज दरसराज की रानी देवल कुँअरि के गर्भ से हुआ। यह एक महातेजस्वी बालक था। अब तक महोबा राजवंश में कोई राजकुमार नहीं था। प्रथम बार इस पुत्र के उत्पन्न होने पर राजा परिमाल और रानी मल्हना ने भी बड़ा उत्सव मनाया। राजमन्त्री व पुरोहित चिन्तामणि चौहान ने बालक के लक्षणों को देखकर कहा कि यह पुत्र सिंह लग्न में उत्पन्न हुआ है। यह सिंह के समान पराक्रमी होगा।

बड़े होकर बड़े-बड़े राजाओं को परास्त करेगा और उसका नाम युगयुगान्तर तक प्रसिद्ध रहेगा। यह 'आल्हा' के नाम से जाना जाता है। आल्हा का विवाह 17 वर्ष की अवस्था में नैनागढ़ के नेपाली राजा की कन्या सोनवा के साथ हुआ। सोनवा का दूसरा नाम मछला भी था। वह जादू विद्या में पारंगत थी। लोक कथा के अनुसार आल्हा ने माँ भगवती का वर्षों घोर तप किया। यहाँ तक की अपना शीश काटकर अर्पित कर दिया, तब देवी ने अमृत छिड़कर अमरत्व का वरदान दिया। आल्हा ने सभी युद्धों में विजय पाई और अन्त में बेला के सती होने के संग्राम में जब इनके सभी कुटुम्बीजन और वीर मारे गए तब इन्होंने देवी के दिए खड्ग को निकाला, जिसकी परछाई पड़ते ही पृथ्वीराज के सैनिकों, शूर सामन्तों का विनाश हो गया। केवल पृथ्वीराज और चन्द्रभाट एक वृक्ष की आड़ में होने के कारण बच गए। उसी समय गुरु गोरखनाथ ने आकार आल्हा का हाथ पकड़ लिया और पृथ्वीराज व कवि चंद्र को जीवित छोड़कर दिल्ली भिजवा या और आल्हा को साथ लेकर वन गमन किया। आल्हा का एक पुत्र था, जिसका नाम इंदल था। वह आल्हा के समान वीर था। उसने अपनी माता सोनवा से जादू की विद्या भी सीख ली थी। उसका वाह बलखखुबारा के राजा अभिनन्दन की पुत्री चित्ररेखा से हुआ था। इंदल ने भी अनेक युद्धों में घोर क्रम प्रदर्शित किया था।

प्रश्न-5 गुरु गोविन्द सिंह के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर - जीवन परिचय - श्री गुरु गोविन्द सिंह जी सिखों के दसवें गुरु हैं। इनका जन्म पौष सुदी 7वीं सन् 6 को पटना में माता गुजरी जी तथा पिता श्री गुरु तेगबहादुर जी के घर हुआ। उस समय गुरु हादुर जी बंगाल में थे। उन्हीं के वचनोंनुसार गुरुजी का नाम गोविंद राय रखा गया, और सन् 1999 बैसाखी वाले दिन गुरुजी पंज प्यारों से अमृत छक कर गोविंद राय से गुरु गोविंद सिंह जी बन गए। बचपन के पाँच साल पटना में ही गुजरे।

1975 को कश्मीरी पंडितों की फरियाद सुनकर श्री गुरु तेगबहादुर जी ने दिल्ली के चाँदनी चौक में बलिदान दिया। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी 11 नवंबर 1975 को गुरु गद्दी पर विराजमान हुए। धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु ही गुरु गोविन्द सिंह जी ने 1999 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की। पांच प्यारे बनाकर उन्हें गुरु का दर्जा देकर स्वयं उनके शिष्य बन जाते हैं और कहते हैं-जहां पांच सिख इकट्ठे होंगे, वही मैं निवास करूंगा। उन्होंने सभी जातियों के भेद-भाव को समाप्त करके समानता स्थापित की और उनमें आत्म-सम्मान की भावना भी पैदा की।

गुरु गोविन्द सिंह जी की पत्नियाँ, माता जीतो जी, माता सुंदरी जी और माता साहिबकौर जी थीं। बाबा अजीत सिंह, बाबा जुझार सिंह आपके बड़े साहिबजादे थे जिन्होंने चमकौर के युद्ध में शहादत प्राप्त की थीं और छोटे साहिबजादों में बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह को सरहंद के नवाब ने जिंदा दीवारों में चुनवा दिया था। युद्ध की दृष्टि से आपने केसगढ़, फतेहगढ़, होलगढ़, अनंदगढ़ और लोहगढ़ के किले बनवाए। पोंटा साहिब आपकी साहित्यिक गतिविधियों का स्थान था।

दमदमा साहिब में आपने अपनी याद शक्ति और ब्रह्मबल से श्री गुरुग्रंथ साहिब का उच्चारण किया और लिखारी (लेखक) भाई मनी सिंह जी ने गुरुवाणी को लिखा। गुरुजी रोज गुरुवाणी का उच्चारण करते थे और श्रद्धालुओं को गुरुवाणी के अर्थ बताते जाते और भाई मनी सिंह जी लिखते जाते इस प्रकार लगभग पांच महीनों में लिखाई के साथ-साथ गुरुबाणी की जुबानी व्याख्या भी संपूर्ण हो गई।

इसके साथ ही आप धर्म, संस्कृति और देश की आन-बान और शान के लिए पूरा परिवार कुर्बान करके नांदेड में अबचलनगर (श्री हुजूर साहिब) में गुरुग्रंथ साहिब को गुरु का दर्जा देते हुए और इसका श्रेय भी प्रभु को देते हुए कहते हैं- 'आज्ञा भई अकाल की तभी चलाइयो पंथ, सब सिक्ख को हुक्म है. गुरु मान्यो ग्रंथ' गुरु गोविन्द सिंह जी ने 42 वर्ष तक जुल्म के खिलाफ डटकर मुकाबल करते हुए सन् 1708 को नांदेड में ही परलोक गमन कर दिया।

साहित्यिक परिचय - गुरु गोविन्द सिंह जी की रचनाएँ- गुरुजी सिखों के दसवें गुरु होने के साथ-साथ एक महान योद्धा, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता, मौलिक चिन्तक व संस्कृत, ब्रजभाषा फारसी सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे। वे बाल्यकाल से ही सरल, सहज, भक्ति-भाव वाले कर्मयोग थे।

दशम ग्रन्थ की पाण्डुलिपि का प्रथम पत्र। दशम ग्रन्थ में प्राचीन भारत की सन्त-सैनिक परम्पर की कथाएँ हैं।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने जीवनकाल में अनेक रचनाएँ की जिनकी छोटी छोटी पोथिय बना दीं। उनके प्रयाण के बाद उन की धर्म पत्नी माता सुन्दरी की आज्ञा से भाई मणी सिंह खालसा औ अन्य खालसा भाइयों ने उनकी सारी रचनाओं को इकट्ठा किया और एक जिल्द में चढ़ा दिया। इनमें कुछ ये हैं-

1.जापु साहिब - जापु साहिब या जाप साहिब, दशम ग्रन्थ की प्रथम वाणी है। यह सिखों क प्रातः की प्रार्थना है। इसका संग्रह भाई मणि सिंह ने 1734 के आसपास किया था। एक निरंकार वे गुणवाचक नामों का संकलन।

2.अकाल स्तुति - ईश्वर की सर्वव्यापकता का चित्रण करती कृति जिसमें प्रभु की ती भूमिकाओं (उत्पन्न करने वाला, पालन करने वाला और संहारक) का उल्लेख है।

3.विचित्र नाटक - विचित्र नाटक या बिचितर नाटक गुरु गोविन्द सिंह द्वारा रचित दशम ग्रन का एक भाग है। वास्तव में इसमें कोई 'नाटक' का वर्णन नहीं है बल्कि गुरुजी ने इसमें उस समय क परिस्थितियों तथा इतिहास की एक झलक दी हैं और दिखाया है कि उस समय हिन्दू समाज पर मंडर रहे संकटों से मुक्ति पाने के लिये कितने अधिक साहस और शक्ति की जरूरत थी।

काव्य के स्थान - गुरु गोविन्द सिंह को मात्र 42 वर्ष की आयु प्राप्त हुई थी। उन्होंने इन स्वल्प वर्षों में अनेक दुष्कर कार्य किए हैं। ऐसे कार्य जो विविधता को इस प्रकार अपने अंदर समेट लेते हैं कि कहीं-कहीं उनमें विचित्र-सा विरोधाभास नजर आने लगता है। वे एक आध्यात्मिक पुरुष और सांसारिक व्यक्तित्व एक योद्धा और एक ऐसी गद्दी के स्वामी जिसके

पीछे पीढ़ियों की उपार्जित प्रतिष्ठा, वैभव एवं असंख्य अनुगामियों का समूह:- ये सब कुछ कहीं एक दूसरे के विरोधी दृष्टिगत होते हैं। परन्तु गुरु गोविन्द सिंह के व्यक्तित्व में ये सभी बातें अद्भुत रूप से समाई हुई हैं, और इससे निर्णय करना कठिन हो जाता है कि उनके व्यक्तित्व का कौन-सा रूप दूसरे की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

प्रश्न-6 महाकवि भूषण का संक्षिप्त जीवन और साहित्यिक परिचय दीजिए।

अथवा

महाकवि भूषण का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - रीतिकाल में शृंगार काव्य की रसपूर्ण धारा के साथ ही भक्ति काव्य, नीति काव्य और वीर काव्य की अन्य काव्य धारायें भी दिखायी पड़ती हैं। शृंगार के घोर विलासी वैभव के वातावरण में भूषण एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने वीर रस से ओत-प्रोत अपनी काव्य रचनाओं के द्वारा अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। उन्होंने 'शिवराज भूषण' जैसे काव्य ग्रन्थ की रचना करके वीर काव्य परम्परा का मार्ग प्रशस्त किया। रीतिकाल में वीर रस की काव्य रचना करने वाले यद्यपि और भी कवि हैं, किन्तु रीतिकाल में वीर काव्य के प्रणेता भूषण ही माने जाते हैं।

परिचय - भूषण छत्रपति महाराज शिवाजी के समकालीन थे। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था जो कश्यप गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिन्तामणि तथा मतिराम भूषण के भाई थे। उनका जीवन काल सन् 1913 से 1715 ई0 तक माना जाता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार उनका वास्तविक नाम घनश्याम था। 'भूषण' इनकी उपाधि थी जो चित्रकूट हृदयराम के पुत्र रुद्रसुलंकी द्वारा प्रदान की गयी थी-
“कुल सुलंक चित्रकूट पति, साहस सील समुद्र ।

कवि 'भूषण' पदवी हुयी, हृदयराम सुतरुद्र ॥”

छत्रपति शिवाजी महाराज तथा छत्रसाल बुन्देला भूषण के आश्रयदाता थे। इन्हीं की प्रशस्ति, शौर्य पराक्रम के वर्णन में भूषण ने ओजपूर्ण काव्य ग्रन्थों की रचना की।

रचनायें - मुख्य रूप से भूषण की तीन काव्य रचनायें उपलब्ध हैं-

- (1) शिवराज भूषण,
- (2) शिवा बावनी,
- (3) छत्रसाल दशक ।

'शिवराज भूषण' एक अलंकार ग्रन्थ है। इसमें 384 छन्द हैं। इसमें दोहों में अलंकार के लक्षण और कवित्त- सवैयों में सम्बन्धित छन्दों के उदाहरण दिये गये हैं। इसके उदाहरणों में शिवाजी के जीवन की प्रमुख घटनाओं, युद्धों तथा शौर्य पराक्रम की अनेक गतिविधियों का ओजस्वी वर्णन हुआ है। मूल रूप से 'शिवराज भूषण' एक लक्षण ग्रन्थ है जिसकी रचना रीति काव्य की परम्परा के अनुसार ही की गयी है।

'शिवा बावनी' के 52 छन्दों में शिवाजी महाराज की यशोगाथा का ओजस्वी वर्णन हुआ है। 'छत्रसाल दशक' के दस छन्दों में छत्रसाल बुन्देला का यशोगान हुआ है। इन दोनों काव्य रचनाओं में वीर रस का सच्चा उत्कर्ष देखने को मिलता है। 'शिवराज भूषण' की रचना से भूषण की प्रतिष्ठा एक आचार्य कवि के रूप में हुयी, वहीं 'शिवा बावनी' तथा 'छत्रसाल दशक' काव्य रचनाओं के द्वारा वे रीतिकाल के वीर काव्य परम्परा के प्रवर्तक के रूप में स्मरण किये जाते हैं।

हिन्दी साहित्य में स्थान - रीतिकालीन युग की शृंगारिक प्रवृत्ति का तिरस्कार कर वीर रस के काव्य का सृजन करनेवाले रीतिकालीन कवि भूषण का नाम वीर रस के कवियों में सर्वप्रथम लिया जाता है। यद्यपि कविवर भूषण अपने युग (रीतिकालीन युग) को लक्षण-ग्रन्थ परम्परा एवं अन्य प्रवृत्तियों से सर्वथा मुक्त नहीं थे और इनके काव्य में भी रस, छन्द, अलंकार आदि का प्रयोग शास्त्रीय रूप में हुआ है, तथापि इन्होंने तत्कालीन विलासितापूर्ण शृंगारिकता को त्यागकर राष्ट्रप्रेम और वीरोचित भावों से युक्त काव्य-रचना की। जातीय एवं राष्ट्रीय भावनाओं को सशक्त अभिव्यक्ति एवं अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले लोकनायकों-शिवाजी एवं छत्रसाल के वीरोचित गुणों का प्रकाशन इनके काव्य का मुख्य विषय रहा है। अपने काव्यों में वीर रस एवं राष्ट्रीय भाव को विशिष्ट तथा सशक्त अभिव्यक्ति देने के कारण कविवर भूषण को हिन्दी साहित्य का 'सर्वप्रथम राष्ट्रकवि' माना जाता है।

प्रश्न-7 भूषण की वीर भावना का स्वरूप क्या है?

उत्तर - भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल की 'वीरता का वर्णन खुलकर किया है। शिवाजी ने दक्षिण भारत में राष्ट्रविरोधी शक्तियों का दमन करके इस क्षेत्र को आततायियों से मुक्त किया और सुख-शान्ति की स्थापना की। इसी प्रकार महाराज छत्रसाल ने मध्य भारत में राष्ट्रविरोधी आततायी विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लिया और सुख एवं समृद्धिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध कीं। भूषण ने इन दोनों राष्ट्रनायकों के सुयश एवं कीर्ति - गौरव द्वारा अपनी वाणी को पवित्र किया है।

भूषण ने इन दोनों जननायक वीरों की वीर-भावना का समग्र निरूपण किया है। इन दोनों राष्ट्र सेवी वीरों की कीर्ति - गाथा वर्णन में कवि भूषण की उदात्त वीर-भावना पूरे वेग के साथ व्यक्त हुई है।

प्रश्न-8 वीर भावना कितने प्रकार की होती है?

उत्तर - काव्यशास्त्र की मान्यताओं के अनुसार वीर रस का वर्णन करते समय चार प्रकार के वीर माने जाते हैं-

- (i) युद्धवीर
- (ii) धर्मवीर
- (iii) दानवीर और

(iv) दयावीर।

इन चार प्रकार की वीरभावना के अतिरिक्त आधुनिक कतिपय आलोचकों ने अन्य प्रकार की वीर भावना की भी चर्चा की है।

यथा-

(i) स्तुतिपरक वीर भावना

(ii) ऐतिहासिक वीर भावना

(iii) पौराणिक वीर भावना

(iv) राजनीतिक वीर भावना तथा

(v) सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी वीर भावना।

प्रश्न-9 हरिश्चंद्र का जीवन परिचय एवं रचनाएँ लिखिए।

उत्तर- जीवन परिचय-भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाते हैं। उनका जन्म 9 सितंबर 1850 को काशी (वाराणसी) में एक संपन्न वैश्य परिवार में हुआ था। उनके पिता गोपालचंद्र 'गिरिधर दास' स्वयं कवि थे। भारतेंदु जी ने बहुत कम आयु में साहित्य-सृजन आरंभ कर दिया था। वे हिंदी के साथ संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू और अंग्रेजी आदि भाषाओं के भी ज्ञाता थे।

उन्होंने हिंदी साहित्य को आधुनिक चेतना, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक सुधार और जन-जागरण से जोड़ा। उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से भी हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'कविवचनसुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन' और 'बालाबोधिनी' जैसी पत्रिकाओं का संपादन/प्रकाशन उनके प्रमुख कार्यों में शामिल हैं। भारतेंदु जी का जीवन बहुत छोटा रहा। 6 जनवरी 1885 को मात्र 34 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उनके साहित्यिक योगदान के कारण हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु युग का विशेष महत्व है।

प्रमुख रचनाएँ

1. नाटक

अंधेर नगरी

भारत दुर्दशा

सत्य हरिश्चंद्र

नीलदेवी

चंद्रावली

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

2. काव्य

प्रेम माधुरी

प्रेम सरोवर

प्रेम प्रलाप

वर्षा-विनोद

विनय प्रेम पचासा

3. गद्य एवं अन्य रचनाएँ

भारतेन्दु के निबंध

बकरी विलाप

एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न

स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन

साहित्यिक विशेषताएँ

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के साहित्य में राष्ट्रीय भावना, देश-प्रेम, सामाजिक सुधार, जन-जागरण, हास्य-व्यंग्य और आधुनिक चेतना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उन्होंने हिंदी गद्य को सरल, प्रभावशाली और जनसामान्य के निकट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष: भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव मजबूत की। इसलिए उन्हें उचित रूप से “आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक” कहा जाता है।

प्रश्न-10 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाषागत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

अथवा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भाषा का वैशिष्ट्य निरूपित कीजिए।

उत्तर - प्रसिद्ध हिन्दी साहित्य इतिहास लेखक आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेन्दु जी की भाषा के सम्बन्ध में कहा था "उनकी भाषा में न तो लल्लू लाल जी का ब्रजभाषापन आने पाया है, न मुंशी सदासुखलाल का पंडिताऊपन और न सदल मिश्र का पूर्वीपन तथा न राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृत प्रधानता।" इस प्रकार भारतेन्दु जी ने अपने साहित्य लेखन में भाषा के प्रति कितने जागरूक थे, यह दृष्टिगत होता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से पूर्व हिन्दी भाषा का स्वरूप स्थिर नहीं था। हिन्दी भाषा के रूप में संस्कृत के तत्सम शब्दों या उर्दू-फारसी के कठिन शब्दों का समावेश था। इसके अतिरिक्त, ब्रजभाषा आदि लोक भाषाओं के अपभ्रंश शब्दों में भी रचनाएँ होती थीं, जो प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग भाषा रूपों में व्यक्त होती थीं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा की खड़ी बोली को साहित्य की भाषा बनाने में योगदान किया। उन्होंने भाषा को स्थायित्व प्रदान किया। भारतेन्दु जी ने गद्य के लिए खड़ी बोली और पद्य के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। उनके गद्य में भी कहीं-कहीं ब्रजभाषा और देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है। उर्दू, फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भारतेन्दु जी ने बेहिचक किया। गद्य में भी कहीं-कहीं ब्रजभाषा और देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है। मुहावरों और लोकोक्तियों के सटीक प्रयोग से उनकी भाषा सजीव और प्रभावशाली बन गई है। रचना की दृष्टि से भारतेन्दु जी की भाषा में कतिपय दोष भी हैं। इसका एकमात्र कारण उस समय भाषा के स्वरूप का निश्चित न होना और भारतेन्दु जी की अत्यधिक

व्यस्तता थी। भारतेन्दु जी की भाषा व्यावहारिक, बोलचाल के निकट प्रवाहमयी और जीवन्त है। वह विषयानुसार कहीं व्यावहारिक और कहीं परिमार्जित शब्दों से युक्त रही है। वह साफ-सुथरी, छोटे-छोटे वाक्यों वाली, सरल और सुग्राह्य है। भाषा को मार्मिक बनाने के लिए उन्होंने यत्र-तत्र मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग किया है। यद्यपि इनकी भाषा में यत्र-तत्र व्याकरण की अशुद्धियों के भी दर्शन होते हैं, तथापि भारतेन्दु जी की भाषा ने पाठकों को हिन्दी पढ़ने के लिए आकर्षित अवश्य किया। संक्षेप में आपकी भाषा सरल, सुबोध सुमधुर व्यावहारिक, भावानुवर्तिनी तथा प्रभावशाली है। स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र निज भाषा को हृदय से प्रेम करते थे। भाषा के सम्बन्ध में उनका कथन था -

निजभाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय कौ शूल ॥

प्रश्न-11 'भीतर भीतर सब रस चूस' पद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - यह छन्द प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'नए जमाने की मुकरी' से लिया गया है। भारतेन्दु जी की ये मुकरी आम जन के बीच काफी लोकप्रिय हुई थी। इस छन्द में भारतेन्दु जी ने पहेलियों के माध्यम से अंग्रेजों की चालबाजियों को आम जनता के सामने प्रस्तुत किया है।

भारतेन्दु जी के अनुसार बाहर से सभ्य शालीन और मीठी-मीठी बातें करने वाले अंग्रेजों ने देश को अन्दर से बिल्कुल खोखला कर दिया। उन्होंने जी भर कर हमारे देश को लूटा। छल कपट और धोखे से इस देश को कंगाल बनाकर उन्होंने स्वयं को धन-धान्य में समृद्ध बना लिया। अपनी चतुराई अथवा चालाकी से उन्होंने देश को हर स्तर पर क्षति पहुँचाई। लूट और दमन अंग्रेजों के अस्त्र रहे हैं। एक सखी दूसरी से जब पूछती है कि लुटेरा कौन है? ये कोई साजन हैं क्या? तो सखी उत्तर देती है कि हमारा सब कुछ लूटने वाले साजन नहीं अंग्रेज हैं। यहाँ कवि ने अंग्रेजों के वास्तविक चरित्र को उद्घाटित किया है।

प्रश्न-12 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जीवन परिचय दीजिए।

अथवा

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन कीजिए।

उत्तर - द्विवेदी युग आधुनिक हिन्दी साहित्य का उत्थान व परिष्कार युग है। आधुनिक हिन्दी - साहित्य के इतिहास में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त ऐसे दो प्रखर तेजस्विता और ऐतिहासिक गरिमा से सम्पन्न नाम हैं जिनके साहित्य से निरसन की परिकल्पना हिन्दी-खड़ी बोली की गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाने के लिए पर्याप्त है। वर्तमान

युग के प्रबन्ध कार्यों को लेकर विचार करने पर 'यह निश्चित होता है कि द्विवेदी युग के हरिऔध का 'प्रियप्रवास' व मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' के बिना हिन्दी की आधुनिक कविता का इतिहास अधूरा है। जैसे भक्तिकाल में सूर और तुलसी का युग है। उसी प्रकार आधुनिक काल में 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त एक-दूसरे के पर्याय हैं। मैथिलीशरण गुप्त जहाँ राष्ट्रीय और सांस्कृतिक गौरव को जीवन्त रूप में प्रस्तुत करते हैं वहीं हरिऔध जी उन्हीं राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों को प्राचीनता से जोड़कर परम्परावादी आलम्बनों में आधुनिक हिन्द काव्य मूल्यों की व्याख्या करते हैं।

जीवन-परिचय - पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की का जन्म सन् 1865 ई. को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ के निजामाबाद तहसील में हुआ है। इनके पिता का नाम भोला सिंह उपाध्याय और माता का नाम रुक्मिणी देवी था, इनके पूर्वज शुक्लयजुर्वेदीसनाढ्यब्राह्मण थे जो बाद को सिख मतानुयायी हो गये थे। इनके निःसंतान चाचा पं. ब्रह्म सिंह उपाध्याय ने हरिऔध जी की आरम्भिक संस्कार अपनी वात्सल्य वर्षा के द्वारा बनाए। आरम्भ से ही इस प्रकार शिक्षा के प्रति हरिऔध जी के मन में विशेष अनुराग उत्पन्न हो गया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय मिडिल स्कूल में हुई तथा बाद को अंग्रेजी के लिए काशी के क्वींस कॉलेज में इनका प्रवेश कराया गया। यहाँ इनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा फलस्वरूप इनका विद्याध्ययन बन्द हो गया, आगे घर पर ही इन्होंने अंग्रेजी, बंगला, फारसी, हिन्दी और संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञानार्जन किया तथा इनके साहित्य का गम्भीरता से अध्ययन किया। इन्होंने नार्मल परीक्षा को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। कुछ समय तक हरिऔध जी निजामाबाद के तहसीली स्कूल में अध्यापक पद पर कार्यरत रहे उसके बाद बीस वर्ष तक कानूनगो रजिस्ट्रार कानूनगो, सदरनायब कानूनगो जैसे सरकारी पदों पर रहकर सेनानिवृत्त हुए बाद में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हो गए जहाँ से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् साहित्य सेवा में लग गए। सेवा निवृत्ति के छः वर्ष बाद 6 मार्च, 1947 को 82 वर्ष की अवस्था में इन्होंने अन्तिम साँस ली।

साहित्य व्यक्तित्व - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि एवं गद्य लेखक थे। हरिऔध जी ब्रजभाषा में कविता करते थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से उन्होंने खड़ी बोली में काव्य रचना आरम्भ की। इसीलिए उन्होंने इसके पश्चात् खड़ी बोली में रचना की और हिन्दी - काव्य को अपनी प्रतिभा का अमूल्य योगदान दिया। हरिऔध की कविता को लोकहित और मानव कल्याण के प्रेरणीय-साधन के रूप में मानते थे से काव्य को ईश्वर-प्रदत्त अलौकिक वरदान समझकर काव्य-रचना करते थे। इसी कारण उनके काव्य में सर्व कल्याण की भावना विद्यमान थी। उनके काव्य में पौराणिक और आधुनिक समाज के ख्याति प्राप्त लोकनायक-नायिकों को प्रतिनिधि स्थान प्राप्त हुआ। भावुकता के साथ ही नैतिकता को प्रश्रय देने वाले हरिऔध ही की एक अन्य विशेषता काव्यात्मक विषयों की विविधता भी रही है। इसी कारण इनके काव्य में भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल के काव्य के उज्ज्वल पहलुओं का समावेश हुआ है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा उनकी काव्य कृति 'प्रियप्रवास' पर 'मंगलाप्रसादपारितोषिक' दिया गया इसके अतिरिक्त उन्हें 'कवि-सम्राट' और 'साहित्य वाचस्पति' जैसी उपाधियों से भी अलंकृत किया गया। हरिऔध जी की साहित्यिक सेवाओं को ऐतिहासिक महत्व है। वे हिन्दी साहित्य की एक महान विभूति के रूप में थे उनका काव्य अविस्मरणीय है।

कृतित्व - खड़ी बोली- काव्य स्थापना में हरिऔध जी का नाम अग्रगण्य है। हरिऔध जी की साहित्यिक रचनाएँ निम्न हैं-

काव्य ग्रन्थ-

(1) **प्रियप्रवास** - यह हिन्दी साहित्य का खड़ी बोली में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है। यह विप्रलम्भ शृंगार पर आधारित काव्यग्रन्थ है। इसके नायक कृष्ण तथा नायिका राधा हैं जो क्रमशः लोक सेवक व लोक सेविका के रूप में प्रस्तुत होते हैं।

(2) **रसकलाश** - इसमें हरिऔध जी की आरम्भिक स्फुट रचनाएँ संकलित हैं- ये रचनाएँ शृंगार प्रदान हैं तथा काव्य- सिद्धान्त-निरूपण के लिए लिखी गई हैं।

(3) **वैदेही** - वनवास हरिऔध जी की यह प्रबन्ध रचना है। आकार की दृष्टि से यद्यपि यह ग्रन्थ छोटा नहीं है किन्तु इसमें 'प्रियप्रवास' जैसे काव्यत्व का अभाव है।

(4) **चोखे चोपदे** - चुभते चौपदे हरिऔध जी की इन रचनाओं में खड़ी बोली पर आधारित मुहावरों का सुन्दर सौन्दर्य दर्शनीय है। इन मुहावरों में लौकिक जगत की झलक मिलती है।

(5) श्री कृष्णशतक,

(6) प्रेमाम्बुवारिधि

(7) प्रेमाम्बुप्रवाह

(8) प्रेमाम्बुप्रसवण,

(6) बोलचाल,

(10) प्रद्यम् प्रसून,

(11) पारिजात

जैसे फुटकल काव्यग्रन्थ हैं इनके अतिरिक्त उनका गद्य साहित्य इस प्रकार हैं-

(1) नाटक

(क) 'प्रद्युम्न-विजय',

(ख) 'रुक्मिणी-परिणय' ।

(2) उपन्यास -

(क) 'प्रेमकान्ता'

(ख) 'अधखिला फूल'

(ग) ठेठ हिन्दी का ठाठ

(घ) बेजिड़न का बाँका (अनूदित)।

(3) सम्पादित ग्रन्थ

(क) कबीर वचनावली,

(ख) 'हिन्दी भाषा',

(ग) साहित्य का विकास

(4) काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ

(क) रसकलाश

हरिऔध जी ने अपने साहित्यिक ग्रन्थों में जाति-सेवा, देश सेवा, समाज-सेवा की भावनाओं का सांगोपांग निरूपण किया है। यह

निश्चय ही द्विवेदी युग की महान विभूति पथ जिन्होंने खड़ी बोली में 'प्रियप्रवास' जैसा प्रथम महाकाव्य रचकर हिन्दी साहित्य में एक नई दिशा का सूत्रपात किया।

प्रश्न-13 हरिऔध जी का रचना संसार एवं रचना शिल्प पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

हरिऔध जी की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही सशक्त रचना करने वाले हरिऔध जी ब्रजभाषा में रीतिकालीन कवि रूप में आते हैं। आपका 'रस- कलश' रीति ग्रन्थों के अनुकरण में लिखा गया है किन्तु उसकी भूमिका गद्य में होने के कारण अधिक मार्मिक एवं विवेचनात्मक है। आपकी सर्वथा नयी चीज प्रबन्ध काव्य ग्रन्थ (संस्कृत वृत्तों में) 'प्रिय प्रवास' के रूप में आई जो कि हिन्दी साहित्य का कीर्ति स्तम्भ बनकर उभरी और दूसरा महाकाव्य 'वैदेही वनवास' है। 'पारिजात' भी उनका प्रबन्धात्मक शैली में लिखा काव्य है। 'चोखे चौपदे' और 'पद्य-प्रसून' में इनकी फुटकर कविताओं का संकलन हुआ है। आपने खड़ी बोली की कविता उर्दू वह की प्रणाली में भी की है।

हरिऔध जी आधुनिक युगीन इतिहास युग के प्रबन्ध काव्य परम्परा की रीढ़ हैं। हरिऔध जी ने हमें प्राचीन से जोड़कर परम्परावादी आलम्बनों में आधुनिक मूल्य व्याख्याओं का रंग भरा है। उनमें छोर छूने की प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है। संस्कृत वर्ण वृत्तों से लेकर साधारण तुकबंदी तक उनकी कविता में मिलती है। कहीं-कहीं उनकी पंक्तियों में 'है' और 'धा' सहायक क्रियाओं के अतिरिक्त संपूर्णतः संस्कृत ही मिलती है। कहीं उर्दू मिश्रित मुहावरेदार भाषा भी मिलती है। उनका नायिका-भेद भी अपने ढंग से किया है जिसमें आधुनिक बौद्धिकता का समावेश हुआ है। उनका पूरा काव्य रचना संसार वैविध्यपूर्ण है। उनकी कृतियों का संसार निम्नवत् है -

(1) अनूदित - वेनिस का कांटा, रियवान पिकल।

(2) पद्य - प्रेम पुष्पोपहार, काव्योपम, प्रियप्रवास, ऋतु मुकुट, पद्य प्रमोद, श्रीकृष्ण शतक। प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेमाम्बुप्रसवण, प्रेमाम्बु प्रवाह, चोखे चौपदे, बोलचाल, हरिऔध सतसई।

(3) उपन्यास - अधखिला फूल, ठेठ हिन्दी का ठाठ।

(4) नाटक - रुक्मिणी परिणय और प्रद्युम्न विजय।

(5) इतिहास, आलोचना एवं सम्पादित - हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास।

(6) काव्यशास्त्र - रसकलश।

प्रश्न-14 मैथिलीशरण गुप्त का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - जीवन-परिचय - मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 ई. को चिरगाँव (जिला झांसी) में हुआ। उनके जनक श्री रामचरण और जननी काशी देवी थी। उनका पारिवारिक परिवेश वैष्णव संस्कारों से युक्त था। बालक मैथिलीशरण पर भी ये संस्कार बचपन से ही पड़ गये। उनकी प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुई। विद्यालय में वे पढ़ने गये, परन्तु नियमित शिक्षा नहीं ग्रहण कर सके। स्वाध्याय द्वारा उन्होंने प्रमुख संस्कृत-ग्रन्थों का अध्ययन किया। लड़कपन से ही वे कविता करने लगे थे। 20 वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते उनकी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थीं। गुप्त जी का प्रथम विवाह बहुत जल्दी हो गया था, परन्तु उनके नवजात पुत्र और पत्नी का असमय निधन हो गया। 1904 ई. में उनका दूसरा विवाह हुआ परन्तु 10 वर्ष बाद दूसरी पत्नी का देहावसान हो गया। 1917 ई. में सरजू देवी से उनका तीसरा विवाह हुआ, जिनसे सात सन्तानें हुईं, पर सभी काल के गाल में समा गईं। आठवीं सन्तान 1936 ई. में उर्मिला चरण के रूप में हुई, जिनसे कवि की वंश परम्परा आगे बढ़ी।

व्यक्तित्व - गुप्त जी के व्यक्तित्व को जाने बिना उनको भली-भाँति समझना असम्भव है। गुप्त जी की पारिवारिक आत्मीयता, उनका वैष्णव हृदय, राष्ट्र और देश-प्रेम, समन्वयशीलता और मानवीयता, प्राचीन संस्कार और आदर्श भावना उनके काव्य को प्रभावित करते रहे हैं। गुप्त जी को पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा मुंशी अजमेरी (जो उनके ग्रामवासी थे) से काव्य रचना में प्रेरणा और उत्साह प्राप्त हुआ। गुप्त जी के पिता भी काव्यानुरागी सज्जन थे। बाल्यावस्था में ही गुप्त जी ने उनकी कविता - पुस्तक में एक रचना लिख दी, जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने गुप्त जी को कवि बनने का आशीर्वाद दिया, जो गुप्त जी के जीवन में सत्य प्रमाणित हुआ। सन् 1906 ई. में राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रेरित होकर वे काव्य क्षेत्र में आए और तब से बराबर साहित्य-रचना करते रहे।

गुप्ता जी की कृतियाँ- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने लम्बे जीवन में बहुत सारी रचनाएँ रची जिनका उल्लेख काल-क्रम से निम्नलिखित है-

हेमन्त (प्रथम कविता - 'सरस्वती' में प्रकाशित) 1906 ई., 2. रंग में भंग (1906 ई.), 3. भारत-भारती (1912 ई.), 4. तिलोत्तमा (1915 ई.), 5. चन्द्रहास (1919 ई.), 6. किसान (1919 ई.), 7. वैतालिक (1919 ई.), 8. पत्रावली (1919 ई.) 9. शंकुतला (1914-23 ई.), 10. लीला (1919 ई. में 'सरस्वती' में प्रकाशित) 11. पंचवटी (1925 ई.) 12. आर्य (1925 ई.) 13. स्वदेश संगीत (1925 ई.), 14. शक्ति (1927 ई.), 15. विकट भट (1928 ई.), 16. गुरुकुल (1928 ई.), 17. हिन्दू (1926 ई.) 18. रत्रिपथगा (बक संहार, वनवैभव, सैरन्धी का संकलन) (1926 ई.), 19. झंकार (1926 ई.), 20. साकेत (1931 ई.) 21. यशोधरा (1932 ई.) 22. उच्छवास (1935 ई.), 23. सिद्धराज (1936 ई.), 24. द्वापर (1936 ई.) 25. मंगल घट

(1937 ई.) 26. नहुष (1940 ई.). 27. कुणाल गीत (1942 ई.). 2. अर्जन-विसर्जन (1942 ई.) 29. विश्व वेदना (1942 ई.), 30. काबा और कर्बला (1942 ई.), 31. अजित (1946 ई.), 32. प्रदक्षिणा (1950 ई.), 33. पृथ्वी पुत्र (1950 ई.), 34. हिडिम्बा (1950 ई.), 35. अंजलि और अर्घ्य (1950 ई.), 36. जय भारत (1952 ई.), 37. भूमि भाग (1953 ई.), 38. राजा प्रजा (1956 ई.). 39. विष्णुप्रिया (1957 ई.). 40. रत्नावली - (1960 ई.), 41. स्वस्ति और संकेत (प्रकाशन 1983ई।

पद्य अनुवाद - 1. विरहिणी व्रजागंगा, (1914, मूल लेखक माइकेल मधुसूदन दत्त), 2. प्रतिभा (1914, मूल लेखक 'भास'), 3. अविमारक (1914, मूल लेखक 'भास'), 4. अभिषेक (1914 मूल लेखक - भास), 5. दूत घटोत्कच (1914, मूल लेखक 'भास'), 6. स्वप्नवासवदत्ता (1914, मूल लेखक 'भास'), 7. प्लासी का युद्ध (1920 मूल लेखक नवीनचन्द्र सेन), 8. मेघनाद वध (1927, मूल लेखक माइकेल मधुसूदन दत्त), 9. वीरांगना (1927, मूल लेखक मधुसूदन दत्त), 10. रूबाइयत उमर खय्याम (1926, मूल लेखक उमर खय्याम), 11. वृत्त संहार (1962, मूल लेखक हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय)।

गद्य रचना - 1. मुंशी अजमेरी (1973 ई. में प्रकाशित), 2. श्रद्धांजलि संस्मरण (1976 ई. में प्रकाशित)।

प्रश्न-15 मैथिलीशरण गुप्त किस कवि के रूप में विख्यात हैं? उल्लेख कीजिए।

उत्तर - गुप्त जी राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हैं। उनका 'भारत-भारती' काव्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत है। इसके अतिरिक्त 'जयभारत', 'साकेत' तथा 'यशोधरा' आदि काव्यों में भी उनकी सांस्कृतिक चेतना मुखर हुई है। भारत के राष्ट्रीय उत्थान में 'भारत-भारती' का योगदान अमिट है।

गुप्त जी से पूर्व काव्य में ब्रजभाषा का आधिपत्य था। खड़ी बोली काव्य के लिए उपयुक्त नहीं मानी जाती थी। गुप्त जी ने खड़ी बोली में 'भारत-भारती' तथा 'जयद्रथ वध' की रचना करके, खड़ी बोली को लोकप्रिय बनाया। 'साकेत' के उत्कृष्ट गीतों को रचकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि खड़ी बोली में भी सरस काव्य की रचना की जा सकती है।

प्रश्न-16 मैथिलीशरण गुप्त के प्रथम काव्य संग्रह का क्या नाम है? साकेत की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - द्विवेदी युग के प्रमुख कवि एवं राष्ट्रीय काव्य धारा के उन्नायक राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रथम काव्य संग्रह का नाम 'रंग में भंग' था। राष्ट्रवादी चेतना से अनुप्राणित यह संग्रह '1906' में प्रकाशित हुआ था। राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर प्रदान करने वाली कृति भारत-भारती (1912) की आधारशिला इस काव्य संग्रह को ही मानना अत्युक्ति न होगा। भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं राष्ट्रीयता की चेतना को सर्वत्र प्रसारित प्रचारित करने हेतु गुप्त जी चिर स्मरणीय रहेंगे। गुप्त जी की कीर्ति सम्पूर्ण साहित्य में द्विगुणित करने का

श्रेय उनकी सर्वप्रमुख कृति 'साकेत' को जाता है। 'रामकथा' पर आधारित यह ग्रंथ 'रामचरित मानस' के बाद सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ की उपमा से विभूषित है। इसकी संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है

'साकेत' अयोध्या का पर्याय है और 'साकेत' में राम के जन्म से लेकर वनवास के पश्चात् अयोध्या वापस लौटने तक का सम्पूर्ण विवरण महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'साकेत' में राम को साधारण मानव के रूप में चित्रित किया गया है। इसकी प्रमुख विशेषता रामचरित मानस में उपेक्षित पात्र उर्मिला के उदात्त चरित्र को सामने लाना है। कैकेई के चरित्र की भी अनोखी व विशद व्यंजना साकेत की मौलिकता को सामने लाती है। इस महाकाव्य में नायक व नायिका लक्ष्मण व उर्मिला को माना गया है।

प्रश्न-17 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता का सारांश /सार कथ्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर -'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। इस प्रस्तुत गीत में कविवर प्रसाद अपने देश के अतीत गौरव का स्मरण करते हुए कहते हैं कि अरुणिमा (ऊषाकाल में आकाश में प्रस्फुटित होनेवाली लालिमा) से परिपूर्ण भारत देश मधुरता से परिपूर्ण है। तात्पर्य यह है कि हमारे ही देश में मानव सभ्यता का सर्वप्रथम उदय हुआ था और हमारे ही देश में सर्वत्र अनुराग का माधुर्य व्याप्त है। हमारा देश वह देश है, जहाँ प्रत्येक देश को आश्रय प्राप्त होता है; अर्थात् हम हृदय खोलकर विश्व के प्रत्येक प्राणी की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं।

प्रसादजी अपने देश के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण करते हुए कहते हैं कि यहाँ वृक्षों की चोटियों पर प्रातः काल ही लाल-लाल ज्योति बिखर जाती है। उमंग से परिपूर्ण वृक्षों की शिखाएँ नृत्य करने लगती हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानो जीवन की अनन्त हरियाली पर मंगलमय सिन्दूर छिटक गया हो। हमारा देश पशु-पक्षियों को भी आत्मीयता प्रदान करनेवाला है। इसीलिए अपने नन्हें इन्द्रधनुष जैसे रंग-बिरंगे पंखों को फैलाए हुए अनेक देशों के पक्षी हमारे देश को अपना प्यारा घर समझकर यहाँ उड़ते हुए चले आते हैं।

हमारे देश में वर्षा ऋतु में बरसनेवाले बादल मानो इस धरती के ताप को हरने के लिए करुणा जल की वर्षा करते हैं। अनन्त सागर की लहरें विशाल तट पाकर यहाँ टकराती रहती हैं। मेरे प्यारे देश में सुबह-सवेरे दिशा-सुन्दरी अपना स्वर्ण कलश लेकर आकाश से सुखों की वर्षा करती है। उस समय रातभर जागने वाले तारे अलसाकर ऊँघ रहे होते हैं। तात्पर्य यह है कि रात्रिकालीन आकाश तारों से जगमगाता रहता है और प्रातः काल में उन तारों को द्युति मन्द पड़ने पर बाल सूर्य अपनी अरुण आभा सर्वत्र छिटका देता है।

प्रस्तुत गीत में कविवर प्रसाद जी ने संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली में भारत के प्राकृतिक और सांस्कृतिक सौन्दर्य का व्यापक चित्रण किया है। विभिन्न प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से भारत की करुणा, उदारता, शरणागत की रक्षा भावना, मानव मात्र की कल्याण-कामना आदि का सुन्दर चित्रण हुआ है।

प्रश्न-18 मैथिलीशरण गुप्त ने आर्य शीर्षक कविता में क्या उल्लेख किया है?

उत्तर - राष्ट्रकवि मैथिलीशरण द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'आर्य' में कवि ने भारतवर्ष के प्राचीन गौरव का स्मरण कराते हुए वर्तमान स्थिति का आकलन प्रस्तुत किया है। कवि ने विचार किया है कि हम कौन थे अर्थात् पूर्व में हम कितने समृद्ध, गौरवशाली, बलशाली हुआ करते थे, लेकिन वर्तमान में हम कैसे हो गए हैं और आगे भी न जाने और क्या हो जाएँगे। यह अत्यन्त गम्भीर समस्या है। इस समस्या को हम सबको मिलकर सोचना चाहिए और इसका समाधान करना चाहिए। कवि अतीत के गौरव का वर्णन करता हुआ कहता है कि हमारा देश सम्पूर्ण पृथ्वी का गौरव रहा है, प्रकृति जिस प्रकार यहाँ लीला करती है, समस्त पृथ्वी पर ऐसी लीला कहीं नहीं है अर्थात् भारतवर्ष में जितनी ऋतुएँ समय-समय पर आती हैं अन्य स्थानों पर यह सम्भव नहीं है, पूरे संसार में हिमालय जैसा मनोहर और विशाल पर्वत नहीं है और न ही पवित्र गंगाजल कहीं उपलब्ध हो। सोचकर देखें तो लगता है कि सम्पूर्ण देशों में सर्वश्रेष्ठ कौन-सा देश है? उत्तर मिलता है कि जो ऋषियों की भूमि है, जिसका नाम भारतवर्ष है, वहीं सर्वश्रेष्ठ देश है।

हमारे देश भारतवर्ष की भूमि अत्यन्त पुण्य और पवित्र है। यहाँ आर्य लोग निवास करते थे। जो विद्या, कला, कौशल सिखाने वाले प्रथम गुरु थे। यद्यपि आज उन आर्यों की सन्तान वैसी अवस्था में नहीं रही, समय के चक्र ने उन्हें नीचे गिरा दिया है, लेकिन उन आर्यों की श्रेष्ठता के चिह्न अभी भी शेष हैं, जो हमें हमारे गौरव की स्मृति दिलाते रहते हैं। प्राचीन काल से ही यहाँ जो भी संसार में जन्म लेता था, वह संसार पर उपकार करने के लिए होता था। हमारे पूर्वज आर्य कभी भी अकर्मण्य होकर नहीं बैठे। वे सदा देश समाज को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहे। इन्हीं के कार्यों से जो ज्योति प्रज्वलित हुई थी, वह आज भी संसार में जल रही है। भाव यह है हमारे अतीत के विद्वानों, ज्ञानियों, ऋषि-मुनियों का ज्ञान समस्त संसार में फैल रहा है।

हमारे पूर्वज आर्य हर प्रकार के मोह के बन्धनों से मुक्त थे, वे स्वच्छंदतापूर्वक अर्थात् मनमर्जी से जीते थे, वे किसी के अधीन न होकर स्वतन्त्र थे, उनके पास हर प्रकार सुख था, वे शान्ति के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान थे। वे सदैव मून, वचन, कर्म से प्रभु के भजन में लीन रहते थे। संसार में प्रसिद्ध ब्रह्मानन्द सरोवर में रहने वाली मनोहारी मछली के समान विचरण करते थे। अभिप्राय यह है कि उनका जीवन हर प्रकार बाधा से दूर था और वे ब्रह्मानन्द को प्राप्त करते थे। इस प्रकार कवि ने आर्यों के शान्त, निस्पृह जीवन के स्वरूप को वर्णित किया है।

प्रश्न-19 प्रसाद जी द्वारा रचित राष्ट्रीय काव्यधारा से ओत-प्रोत 'प्रयाण गीत' (हिमाद्री तुंग श्रृंग) का सारांश लिखिए।

उत्तर - प्रसाद जी की यह कविता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लिखी गई थी। इस कविता के कारण प्रसाद जी को उस समय बड़ी प्रसिद्धि मिली थी। इस कविता के माध्यम से कवि ने देशवासियों को अपने राष्ट्र की सेवा के लिए प्रेरित किया और उन्हें राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान करने की सीख दी।

वस्तुतः यह एक प्रयाण गीत है जो कि प्रसाद जी के द्वारा लिखित ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' से लिया गया है। इस नाटक में यह गीत अलका नाम एक वीर युवती द्वारा देशवासियों में स्वदेश प्रेम की भावना को जागृत कर उन्हें यूनान की सेना का मुकाबला करने हेतु गाई जाती है। अलका भारत के निवासियों को देश के वीर सपूत कहकर पुकारती और उन्हें हिमालय की चोटी से आने वाली स्वतंत्रता की पुकार सुनने को कहती है। अलका के अनुसार यह पुकार स्वयं प्रकाशित देवी की है जो वीरों को दृढ़ निश्चय के साथ देश की मर्यादा की रक्षा के लिए स्वतंत्रता के मार्ग पर आगे बढ़ने को कहती है। उसके अनुसार देश को आजाद कराना एक राष्ट्रीय कर्तव्य है और इस कर्तव्य पथ पर चलना सभी भारतीयों के लिए एक पुण्य का कार्य है। वह देशवासियों से कहती है कि आजादी की राह में प्राणों की बाजी लगाना एक परम पुनीत कर्तव्य है जो जीवन को सार्थक बना देती है। अतः उन्हें स्वतंत्रता के कर्तव्य मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते जाना है, भले ही प्राण क्यों ना चले जायें।

अलका के माध्यम से कवि आगे कहता है कि स्वतंत्रता का पथ देशवासियों के पूर्वजों की कीर्ति किरणों से आलोकित है। इस मार्ग पर चलते हुए उन्हें पूर्वजों के मान मर्यादा का भी ध्यान रखना है। जिन्होंने अपने प्राण देकर देश की आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखा। आगे कवि उन्हें अपना पथ प्रदर्शक स्वयं ही बनने की प्रेरणा देता है। अलका देशवासियों से स्पष्ट कहती है कि उन्हें किसी पथ प्रदर्शक का इंतजार नहीं करना चाहिए। बल्कि बिना देर किए शत्रुओं के सागर में आग बनकर धधक पड़ना चाहिए। ताकि शत्रुओं का विनाश हो सके। कवि ओजपूर्ण वाणी में देशवासियों को सच्चा वीर बताते हुए उन्हें स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग पर भयमुक्त होकर निरंतर आगे बढ़ने की सलाह देता है। क्योंकि कवि के अनुसार विजय निश्चित है।

प्रश्न-20 जयशंकर प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में स्थान निर्धारित कीजिए।

उत्तर - जयशंकर प्रसाद भाव और शिल्प दोनों दृष्टियों से हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। प्रसादजी ने द्विवेदीयुगीन काव्यादर्श के विरुद्ध विद्रोह किया और एक नवीन काव्यधारा के रूप में छायावाद का सूत्रपात किया। उन्होंने छायावाद को पुष्ट किया और स्वयं इसके शीर्ष स्थान को प्राप्त किया। भाव और कला, अनुभूति और अभिव्यक्ति, वस्तु और शिल्प सभी क्षेत्रों में युगान्तकारी परिवर्तन किए हैं। डॉ. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य में उनके योगदान का उल्लेख करते हुए लिखा है - " वे छायावादी काव्य के जनक और पोषक होने के साथ ही आधुनिक काव्य धारा का गौरवमयी प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रसाद जी ने जहाँ एक ओर रीतिकालीन अफीमची शृंगारिकता से कविता- कामिनी को निकाला, वहीं उन्होंने द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता के नीरस एवं शुष्क रेगिस्तान में, उसके सूखे हुए कण्ठ को मधुर रस-धार प्रदान की।"

प्रश्न-21 निराला के जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - निराला का जन्म सम्बत् 1953 की बसन्त पंचमी को महिषादल रियासत के मेदिनीपुर गाँव के रामसहाय त्रिपाठी के यहाँ हुआ था। तीन वर्ष की अवस्था में मातृ स्नेह से वंचित होने के कारण उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। 14 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हुआ परन्तु शीघ्र ही पुत्र व पुत्री को जन्म देने के बाद उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। इस घटना ने उन्हें अर्द्ध-विक्षिप्त कर दिया। 1923 में उनकी 'जूही की कली' कविता का प्रकाशन हुआ। वे जीवन भर आर्थिक अभाव से जूझते रहे। 15 अक्टूबर, 1961 को उनका देहांत हो गया।

प्रश्न-22 निराला के साहित्यिक जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - निराला प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे परन्तु अनेक विरोधियों व धनाभाव ने उनकी प्रतिभा को उभरने का अवसर नहीं दिया। उनकी प्रथम कविता 'जूही की कली' थी जिसने उन्हें प्रशंसा के साथ-साथ विरोधियों की भीड़ भी दी। उन्होंने 'मतवाला', 'सुधा' आदि पत्र-पत्रिकाओं का सम्पदान किया। परिमल, अनामिका, अणिमा, नये पत्ते, आराधना, गति कुंज, सांध्य की कली आदि उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह हैं। अलका, अप्सरा आदि प्रमुख उपन्यास हैं। लिली, सखी 'चतुरी चमार' आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक जीवनियाँ, नाटक, निबन्ध संग्रहों आदि की भी रचना की।

प्रश्न-23 महाकवि निराला जी की 'भारती जय-विजय करे' कविता का सारांश लिखिए।

अथवा

'भारती वन्दना' कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - 'भारती जय - विजय करे' शीर्षक महाकवि निराला जी के 'गीतिका' नामक काव्य संग्रह में संकलित है। इसमें निराला जी ने माँ भारती की वन्दना करते हुए उसकी प्राकृतिक सम्पदा का वर्णन किया है। भारत के एक ओर हिमालय है, तो दूसरी ओर माँ के चरणों को धोता सागर है। यहाँ की धरती हरी भरी है। चारों दिशाओं में ओंकार की ध्वनि गूँजती है। ऐसी माँ भारती की कौन वन्दना नहीं करेगा, जिसका आँचल पुष्परूपी वीरों से भरा है। ऐसी माता की सभी वन्दना करते हैं। यह कविता मन में देशप्रेम की भावना जाग्रत करने में सक्षम है।

प्रश्न-24 माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर -जीवन परिचय - माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता जी का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी तथा माता जी का नाम सुंदरी बाई था। इनका विवाह ग्यारसी बाई से हुआ था। सन् 1905 में जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग, नार्मल शिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक हो गये। इन्हें हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, गुजराती और अंग्रेजी भाषा पर भी समान अधिकार प्राप्त था। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ-साथ माखनलाल चतुर्वेदी जी एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। वे बिलासपुर की जेल में बन्द रहे। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कालजयी कविता उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी। बाद में शिक्षक पद से त्याग पत्र देकर, पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से वे बहुत प्रभावित थे। माखनलाल चतुर्वेदी की पहचान एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में रही है। इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवादी है। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता की अनुगूँजें इनकी कविताओं में प्रमुखता से देखने को मिलती हैं। इन्होंने कुछ आध्यात्मिक और रहस्यवादी भावबोध की कवितायें भी लिखी हैं। मगर मुख्यतः वे राष्ट्रवादी विचारों के ही कवि थे और इसी कारण से इन्हें साहित्य जगत में 'भारतीय आत्मा' कहा जाता है।

साहित्यिक परिचय - चतुर्वेदी जी ने गद्य और पद्य दोनों में विधाओं में लिखा है। इनकी प्रमुख कृतियों के नाम हैं-

काव्य संग्रह - 'हिम किरीटनी' (सन् 1943), 'हिम तरंगिणी' (सन् 1949), 'माता' (सन् 1951), 'युग चरण' (सन् 1956), 'समर्पण' (सन् 1956), 'वेणु ले गूँजे धरा' (सन् 1960), 'बिजुरी काजल आंज रही' (सन् 1954 से 64 के बीच की रचनाओं का संकलन, सन् 1980 में प्रकाशित)।

कहानी संग्रह - 'कला का अनुवाद।

गद्य काव्य - 'साहित्य देवता' (निबन्ध संग्रह)।

नाटक - 'कृष्णार्जुनयुद्ध', 'सिरजन और मंचन'।

सम्पादन - कर्मवीर, प्रताप, प्रभा (पत्रिका एवं समाचार पत्र)।

निबन्ध - 'समय के पांव' (1962, संस्मरणात्मक)।

निबन्ध संग्रह - अमीर इरादे : गरीब इरादे (1960), रंगों की होली (सन् 1944 तक के निबन्धों का संकलन, 1980 में प्रकाशित) भाषण संग्रह - चिंतन की लाचारी (1965)।

सम्मान - सागर विश्वविद्यालय से डी लिट की उपाधि, सन् 1969 में पद्म भूषण सम्मान (सन् 1963)

पुरस्कार - साहित्य अकादमी पुरस्कार, देव पुरस्कार।

चतुर्वेदी जी की प्रसिद्धि कवि रूप में ही अधिक रही। ये एक पत्रकार, निबन्धकार और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे।

भाषा-शैली - चतुर्वेदी जी की भाषा ओजपूर्ण खड़ीबोली है, जिसमें बोलचाल के शब्दों के साथ-साथ उर्दू-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। भाषा में एक प्रकार की सादगी और मिठास है। चतुर्वेदी जी के कार्य की शैली गीति-शैली है। लक्षणा तथा व्यंजना की अपेक्षा इनके काव्य में अभिधा शक्ति की प्रधानता है। इनकी अधिकतर कविताएँ गेय छन्द में हैं। इनमें कलापक्ष तथा भावपक्ष का सुन्दर समन्वय प्राप्त होता है। छायावादी लाक्षणिकता इनके काव्य-शैली की प्रमुख विशेषता है।

निष्कर्ष - अपनी क्रान्तिकारी कविताओं के लिए ये सदैव याद किए जाएँगे। इनकी कविताओं का ओजस्वी स्वर आज भी युवाओं में मातृभूमि के लिए प्रेम और अनुराग की भावना से भर देता है।

प्रश्न-25 साहित्य पत्रकारिता में माखन लाल चतुर्वेदी का क्या स्थान है

अथवा

माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता के संस्थान थे। इस आधार पर उनकी पत्रकारिता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - माखनलाल चतुर्वेदी साहित्य के प्रकाण्ड पंडित थे। उनका अधिकार साहित्य के प्रत्येक विषय पर था। वह जिस विधा को छूते उसमें निरालापन उपस्थित कर देते। माखनलाल चतुर्वेदी मूलतः कवि हैं उनके गद्य रूपों के मूल में काव्यत्व निहित रहता है। माखनलाल जी ने प्रभा, प्रताप और कर्मवीर पत्रिकाओं का सम्पादन किया। ये एक भारतीय आत्मा नाम से रचना करते थे। इनका लेखन युग राष्ट्रीय चेतना का युग था। पत्रकारिता के माध्यम से जन मानस को झंकझोर जगाने वाले पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महान मनीषी थे। तिलक गाँधी से प्रभावित होकर देशानुराग की भावना से सदैव रहते थे।

“मुझे तोड़ वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक ।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक ॥”

लोक जन की भावना को पत्रकारिता के माध्यम से अभिव्यक्त करने वाले श्रेष्ठ सम्पादक माने जाते हैं। दैदित्य सूर्य के समान उनकी आभा साहित्य जगत में सदैव विद्यमान रही है। आज के वर्तमान युग में भी माखनलाल जी की भाषा भले ही अनगढ़ रही है। परन्तु शब्द-योजना व वाक्य विन्यास अत्यन्त ही प्रभावी रहें हैं।

प्रश्न-26 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर - 'पुष्प की अभिलाषा' कविता ब्रिटिश शासन की गुलामी से आजादी के लिए देश के नौजवानों में देश-प्रेम की भावना जगाने के लिए लिखी गयी थी। इस कविता में कवि ने देश के प्रति समर्पित होने का सन्देश दिया है। पुष्प के माध्यम से कवि ने प्रेरणा दी है कि हमें अपने देश के लिए त्याग बलिदान करने में पीछे नहीं रहना चाहिए।

भारत देश के स्वतन्त्रता सेनानी अंग्रेजों से आजादी के लिए लड़ाई कर रहे थे। यह कविता जनता में देश-प्रेम की भावना पैदा करने के लिए लिखी गयी थी। इस कविता में माली से फूल कहता है, हे माली ! सुनो! मैं नहीं चाहता कि मुझे किसी सुन्दर स्त्री के आभूषण में गूँथा जाये जिससे कि युवती का आकर्षण बढ़ जाये। मुझे किसी सुन्दरी के गले का आभूषण बनने की इच्छा बिल्कुल ही नहीं है। मैं किसी युवती के श्रृंगार का उपकरण नहीं बनना चाहता। किसी प्रेम की माला में गुँथ कर उसकी प्रेमिका को ललचाने की भी मुझे कोई इच्छा नहीं है। हे माली! तुम मुझे किसी सम्राट के शव पर डाले जाने से बचाना। हमें इस तरह का सम्मान पाने की भूख बिल्कुल नहीं है। किसी देवता के सिर पर चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त करने की भी मुझे कोई चाह नहीं है। देश-प्रेम के सामने ये सब बहुत तुच्छ इच्छायें हैं। हमारी अभिलाषा तो मातृभूमि को आजाद कराने के लिए शीश कटाने को तैयार वीरों के चरण चूमना चाहते हैं। अतः तुम हमें उस रास्ते पर बिखेर देना जिस रास्ते से देशप्रेमी सैनिक मातृभूमि की रक्षा के लिए शीश कटाने जा रहे होते हैं।

प्रश्न-27 माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'जवानी' कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर - 'जवानी' कविता माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'हिमकिरीटनी' काव्य संग्रह से ली गई है। चतुर्वेदी जी महान् राष्ट्रभक्त कवियों में से एक हैं। कवि चतुर्वेदी जी ने प्रस्तुत कविता में नौजवानों को सम्बोधित किया है और कहा है कि हे जवानी! वह तू ही तो है जो अपने अन्दर उत्साह शक्ति और प्राणवत्ता को समेटे हुए है। कवि कहता है कि तू अपना तेज खो चुकी है। मैं तो जिधर भी अपनी नजर डालता हूँ मुझे वहाँ गति ही दिखाई देती है। फिर यह सम्भव नहीं है कि तू ठहर जाए। अगर इस गतिशील समय में तू ठहर गई तो तू तो शताब्दी पिछड़ जाएगी। कवि जवानी से कहते हैं कि तू बलिदान करने के लिए तत्पर रह। समर्पण की आवश्यकता होने पर तू पीछे मत हट। तू आलस्य का त्याग कर दे और क्रान्ति के लिए तैयार हो जा।

प्रस्तुत कविता में युवकों का आह्वान करते हुए उन्हें मातृभूमि के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरित किया गया है। कवि कहता है कि हे नवयुवकों ! तुम अपने आपको बलिदान करके इस धरती को कम्पित कर दो तथा हिमालय के एक-एक कण के लिए स्वयं को समर्पित कर दो युवकों को अपने ऊँचे संकल्पों के बल पर सभी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। कवि ने वृक्षों तथा फलों के माध्यम से युवाओं के मन में बलिदान का संकल्प लेकर सिर गर्व से उठाने की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया है। यहाँ युवाओं को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी गई है। उन्हें कायर, स्वाभिमान से रहित और परतन्त्र प्रकृति वाले कुत्तों जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन निर्वाह न करने को कहा गया है। कविता में कवि ने अपने पूर्वजों द्वारा दिखाए गए मार्ग को अपनाने के लिए युवाओं को प्रेरित किया है। हमारे पूर्वज देश के स्वाभिमान के लिए मर मिट गए हैं। युवक जिन स्थानों पर अपना बलिदान करते हैं, वे स्थान पृथ्वी के तीर्थ समझे जाते हैं। समय परिवर्तनशील है। समय का भूगोल हमेशा एक

जैसा नहीं रहा। ब्रह्माण्ड ग्रह नक्षत्रों को अपनी गोद में लेकर घूमता है, वह भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट है। जो व्यक्ति प्रलय के स्वप्न देखते हैं उनके लिए विशाल पृथ्वी भी तरबूज जैसी वस्तु बन जाती है। अर्थात् इस धरती को भी दो टुकड़ों में विभाजित कर सकते हैं।

कवि कहते हैं कि हे युवकों! यदि तुम्हारा खून लाल नहीं है और तुम्हारे मुख पर ओज नहीं है तो तुम भारतमाता के पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हो। तब तुम्हारा कंकाल देश के लिए किसी भी प्रकार काम नहीं आएगा। कवि कहते हैं कि चाहे वेदों के उपदेश हो या स्वयं देवताओं के मुख से निकली आकाशवाणी हो, अगर वह युवाओं में उत्साह नहीं जगाती तो वह निरर्थक है। यह संसार शस्त्र बल का नहीं है, दृढ़ संकल्प का है। किसी भी क्रान्ति का उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना होता है, जिसे दृढ़ निश्चय से प्राप्त किया जा सकता है। दृढ़ संकल्प से मर मिटने की भावना जाग्रत होने पर, ऐसे व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होते हैं। हे युवकों! जीवन में जवानी उसी का नाम है जो मृत्यु को उत्सव और उल्लासपूर्ण क्षण समझे। जीवन में बलिदान का दिन ही जीवन का सबसे उल्लासपूर्ण त्योहार होता है।

प्रश्न-28 कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन और साहित्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - जीवन परिचय - सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 19 अगस्त 1904 इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में एक जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनाथ सिंह था। बाल्यकाल में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा पिता की देख-रेख में हुई। सन् 1919 में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया। विवाह के उपरान्त पिता का घर छोड़ कर वे जबलपुर आ गयीं। बाल्यकाल में ही उनके भीतर देश-प्रेम की भावना पैदा हो गयी थी। उस जमाने में, मात्र 17 वर्ष की उम्र में विवाह के मात्र दो वर्ष बाद ही, 1921. में वे गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लेने चली गयी थीं। वे पहली महिला थीं जिन्होंने असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया। उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा। 44 साल की कम उम्र में ही, फरवरी 1948 को, एक कार दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया था। स्वाधीनता संग्राम की सेनानी होने के साथ-साथ सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रवादी धारा की एक अच्छी रचनाकार भी थीं। 1867 के संग्राम में वीरतापूर्वक अंग्रेजों से लोहा लेने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की रणगाथा को आधार बनाकर उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी जिसके कारण एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में उन्हें खूब प्रसिद्धि मिली। अच्छी कवि होने के साथ-साथ वे अच्छी कथाकार भी थीं। जेल यात्राओं के दौरान मिलने वाली यातनाओं का वर्णन उनकी कहानियों में चित्रित हुआ है। उनकी शैली वातावरण-चित्रण प्रधान तथा भाषा सरल ओजपूर्ण और काव्यात्मक है।

साहित्य परिचय- काव्य संग्रह-मुकुल, त्रिधारा।

कहानी संग्रह - बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे-साधे चित्र (1947)। बाल-साहित्य झाँसी की रानी, कदम्ब का पेड़, सभा का खेल।

कविता संकलन - 'मुकुल तथा अन्य कविताएँ' - (बाल कविताओं के अतिरिक्त

संकलित - असंकलित समस्त कविताओं का संग्रह, प्रकाशक- हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।)

कथा संकलन - सीधे-साधे चित्र (1983) (संकलित -असंकलित समस्त कहानियों का संग्रह)

सम्मान- सेकसरिया पारितोषिक (1931) मुकुल (कविता-संग्रह) के लिए

सेकसरिया पारितोषिक (1932) बिखरे मोती (कहानी-संग्रह) के लिए (दूसरी बार)

अन्य सम्मान-

1. भारतीय डाकतार विभान ने 6 अगस्त, 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 26 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया।

2. 28 अप्रैल, 2006 को भारतीय तटरक्षक सेना द्वारा एक तटरक्षक जहाज का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान रखा गया।

प्रश्न-29 'झाँसी की रानी' गीत का सारांश लिखिए।

उत्तर - झाँसी की रानी कविता हिन्दी की महान कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कविताओं में से एक है। इस कविता के मुख्य केन्द्र में झाँसी की रानी है, जिस प्रकार से रानी लक्ष्मीबाई ने 1867 के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने अदम्य साहस का पुरजोर प्रदर्शन किया था उसका उल्लेख हम इस कविता में देख सकते हैं। हिन्दुस्तान को आजाद कराने की पहली कोशिश में लक्ष्मीबाई ने अपने अद्भुत पराक्रम एवं कौशल का नमूना पेश करके सबको हैरान कर दिया था। रानी लक्ष्मीबाई के पराक्रम के सामने अंग्रेजों को अपना मस्तक नीचे झुकाना पड़ा था।

झाँसी की रानी में यह प्रतिभा कौशल उनके बचपन से ही देखा जा सकता है जहाँ दूसरी लड़कियाँ घरेलू कामकाज और गुड़ड़े-गुड़ियों के खेल में अपना समय व्यतीत करती थी वहीं यह महान विभूति तलवारबाजी के साथ अपना समय बिताया करती थी। अत्यधिक मेहनत एवं कौशल के परिणामस्वरूप लक्ष्मीबाई को युद्ध क्षेत्र में काफी अनुभव प्राप्त हो गया था तथा उसका नमूना हम 1867 की क्रान्ति में देख सकते हैं।

इनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और गुरु का नाम तात्या टोपे था। बचपन में लक्ष्मीबाई को मनु या मणिकर्णिका के नाम से भी जाना जाता था। शादी के पश्चात् इनके पति गंगाधर राव नेवालकर द्वारा इन्हें लक्ष्मीबाई के रूप में नामांकित किया गया। इनके पति की अकाल मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजों ने इनके गोद लिए हुए पुत्र को राजा मानने से इनकार कर दिया।

प्रश्न-30 'विप्लव गायन' गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - 'विप्लव गायन' कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं। कवि देश के नवयुवकों का आह्वान करता है कि अब वीणा के तारों में मधुर संगीत की बजाय क्रान्ति और संघर्ष के गीत गूँजे। भले ही उँगलियाँ ऐंठकर घायल हो जाएँ। कवि विनाश का आह्वान करते हुए हुँकार

भरता है कि अब महानाश की लहरें इधर-उधर से आकर देश में विनाश लीला करें। आगामी पंक्तियों में कवि का अभिप्राय है कि महानाश का गीत अभी कंठावरोध के कारण नहीं निकल पा रहा है। यदि वह गीत वातावरण में गूँजेगा तो क्षणभर में ही महायुद्ध आरम्भ हो जाएगा वह गीत आग उगलेगा, हृदय से चिंगारियाँ फूटेंगी जिनमें सब काँटेदार झाड़ियाँ अर्थात् पुराने गलत रीति-रिवाज व रूढ़िवादी विचारधाराएँ भस्म हो जाएँगी। अपने अन्तिम काव्यांश में कवि स्पष्ट करता है कि कण-कण में वही कठोर स्वर व्यक्त होगा, रोम-रोम से उसी ज्वलंत गीत की ध्वनि गूँजेगी, विषैले नाग के फण से जिस प्रकार विनाशक चिंगारियाँ फूटती हैं उसी प्रकार का महानाश धरती पर जाग उठेगा। जैसे शेषनाग अपनी मणि की चिन्ता करता है वैसे ही प्रत्येक मनुष्य नव-निर्माण के चिन्तन में अग्रसर होगा। कवि विश्वासपूर्वक कहता है कि मैं उस महानाश के पोषक तत्व को स्वयं देख आया हूँ, जो आँख के इशारे से भी व्याप्त हो उठेगा। वास्तव में कवि जड़ता के विरुद्ध देशवासियों में गतिशीलता व उत्साह का संचार करना चाहता है क्योंकि विनाश में ही निर्माण और सृजन के बीज होते हैं इसलिए कवि जीर्ण-शीर्ण व रूढ़िवादी विचारों व रिवाजों को तिलांजलि देकर नवनिर्माण लाने का आह्वान करता है।

प्रश्न-31 शहीद स्तवन (कलम आज उनकी जयबोल) का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - शहीदों की याद में लिखी गयी इस कविता में कवि कहता है कि जिन शहीदों की चिताओं से निकली चिंगारियों से देश में स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने की भावना रूपी आग फैल गयी, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपना बलिदान कर दिया, हे मेरी कलम आज उनकी जय बोलो!

आजादी की लड़ाई में ऐसे अगणित लोगों ने बलिदान दिये जिन्हें हम नहीं जानते। वे चाहते तो बलिदान होने से बच सकते थे। लेकिन उन्होंने किसी प्रकार का समझौता करने की बजाय देश की बलिवेदी पर मर मिटना ही अच्छा समझा, हे मेरी कलम ! तुम उनको याद करो। जिन शहीदों के लहू की लपट से दिशायें लाल हो गयी थीं, जिनकी वीर गर्जना से धरती अभी तक डोल रही है, हे मेरी कलम ! आज तुम उनका जयगान करो।

जो इतिहास के अन्धे हैं, जिन्हें देश का कोई ज्ञान ही नहीं है, वे लोग इन शहीदों के बारे में नहीं जानते। लेकिन ये सूरज, ये चाँद, ये सम्पूर्ण पृथ्वी और आकाश जिन वीरों की शहादत का साक्षी रहे हैं, हे मेरी कलम ! उन वीरों का जयगान करो। यह कविता अपने कलेवर में छोटी है। इसकी भाषा सरल और सुबोध है। इसमें दीपक को शहीदों का प्रतीक माना गया है।

इसकी प्रत्येक पंक्ति में 15 मात्रायें, प्रत्येक पद में पाँच पंक्तियाँ और कविता में कुल चार पद हैं। इस कविता को पढ़कर मन में आजादी की लड़ाई में शहीद हुए ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों के प्रति आदर भाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न-32 दिनकर जी की 'हिमालय' कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर - हिमालय कविता भारत चीन के युद्ध के समय दिनकर जी ने संसद भवन में गाया था। राष्ट्रकवि दिनकर की हिमालय कविता में वर्तमान समय में जकड़ी हुई भारतीय संस्कृति की जर्जर अवस्था के प्रति असन्तोष की भावना परिलक्षित हुई है। इस कविता में कवि हिमालय को सम्बोधित कर कहता है - हे पर्वतराज हिमालय ! तुम दिव्यता की साकार मूर्ति हो, तुम्हारा स्वरूप ही विशाल नहीं अपितु तुम्हारा भी विराट है! तुम भारत माता के मस्तक पर चमकने वाले हिम किरीट हो।

दिनकर जी आगे कहते हैं कि मेरे पर्वतराज ! तुमने यह कैसी अखण्ड समाधि लगा ली है, तुम भला किस गूढ़ समस्या का समाधान ढूँढ़ रहे हो? हे यतिवर ! जरा क्षण भर के लिए अपने नेत्रों को खोलो क्योंकि दुःख से व्याकुल होकर आज पूरा राष्ट्र तुम्हारे चरणों में तड़प रहा है। मातृभूमि की दयनीय अवस्था से क्षुब्ध कवि पर्वतराज को सम्बोधित कर पुनः कहता है- विपत्ति के समय में जिस देश की सीमा पर सजग प्रहरी रूप में खड़े होकर तुमने देश के वीरों का आह्वान किया, आज वह फिर से तुम्हें त्रस्त होकर पुकार रहा है। जिस पुण्य भूमि भारत की तुमने रक्षा की, तुमने जिसे आश्रय दिया, आज उस पर भीषण संकट आन पड़ा है। इधर तुम ध्यानस्त ही रहे और उधर सारा देश वीरान हो गया।

अन्त में कवि कहता है कि आज तो अवध में राम के शील, पौरुष और मर्यादा की परछाई भी नहीं रही, वृन्दावन की कुंज गलियों में कृष्ण की बंसी की तान भी नहीं रही तथा मगध में अशोक और चन्द्रगुप्त मौर्य की अतुल्य वीरता और शौर्य भी नहीं रहा।

हे भारतीय गौरव के सजग प्रहरी, विशाल पर्वतराज हिमालय यदि सत्यनिष्ठ और त्यागमूर्ति युधिष्ठिर स्वर्ग में रहना चाहते हों तो उन्हें खुशी से स्वर्ग जाने दे परन्तु गांडीवधारी वीर अर्जुन और गदाधारी बलशाली भीम को तू देश की रक्षा हेतु पुनः इस देश को लौटा दे। आज का नया युग शंखनाद करके तुझे जगा रहा है। हे विराट तपस्वी, आज तू अपनी समाधि तोड़कर जग जा।

प्रश्न-33 'झण्डा गीत' का सारांश लिखिए।

उत्तर - 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' गीत झण्डा गीत के नाम से प्रसिद्ध है। इस गीत ने स्वाधीनता की लड़ाई में मशाल का काम किया था। यह गीत हमारे तिरंगे का स्तुतिगान है। इस भारत के झण्डा गीत या ध्वज गीत की रचना श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' ने की थी। 7 पद वाले इस मूल गीत से बाद में कांग्रेस ने तीन पद (पद संख्या 1, 6 व 7) को संशोधित करके 'ध्वजगीत' के रूप में मान्यता दी। यह गीत न केवल राष्ट्रीय गीत घोषित हुआ बल्कि अनेक नौजवानों और नवयुवतियों के लिए देश पर मर मिटने हेतु प्रेरणा का स्रोत भी बना।

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा" नामक उक्त सुविख्यात झण्डा गीत को 1938 के कांग्रेस अधिवेशन में स्वीकार किया गया था। इस गीत की रचना करने वाले श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' कानपुर में नरवल के रहने वाले थे। उनका जन्म 19 सितम्बर, 1863 को वैश्य

परिवार में हुआ था। गरीबी में भी उन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की थी। उनमें देशभक्ति का अटूट जज्बा था, जिसे वह प्रायः अपनी ओजस्वी राष्ट्रीय कविताओं में व्यक्त करते थे। कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहने के बाद वह 1923 में फतेहपुर के जिला कांग्रेस अध्यक्ष भी बने। वह 'सचिव' नाम का एक अखबार भी निकालते थे। जब यह लगभग तय हो गया था कि अब आजादी मिलने ही वाली है, उस वक्त कांग्रेस ने देश के झण्डे का चयन कर लिया था। लेकिन अलग "झण्डा गीत" की जरूरत महसूस की जा रही थी। गणेशशंकर विद्यार्थी, पार्षद जी के काव्य-कौशल के कायल थे। विद्यार्थी जी ने पार्षद जी से झण्डा गीत लिखने का अनुरोध किया। पार्षद जी कई दिनों तक कोशिश करते रहे, पर वह संतोषजनक झण्डा गीत नहीं लिख पाए। जब विद्यार्थी जी ने पार्षद जी से साफ-साफ कह दिया कि उन्हें हर हाल में कल सुबह तक " झण्डा गीत" चाहिए, तो वह रात में कागज-कलम लेकर जम गये। आधी रात तक उन्होंने झण्डे पर एक नया गीत तो लिख डाला, लेकिन वह खुद उन्हें जमा नहीं। निराश हो कर रात दो बजे जब वह सोने के लिए लेटे, अचानक उनके भीतर नये भाव उमड़ने लगे। वह बिस्तर से उठ कर नया गीत लिखने बैठ गये। पार्षद जी को लगा जैसे उनकी कलम अपने आप चल रही हो और 'भारत माता' उनसे वह गीत लिखा रही हो। यह गीत था - "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।" गीत लिख कर उन्हें बहुत सन्तोष मिला। सुबह होते ही पार्षद जी ने यह गीत 'विद्यार्थी' जी को भेज दिया, जो उन्हें बहुत पसन्द आया। जब यह गीत महात्मा गाँधी के पास गया, तो उन्होंने गीत को छोटा करने की सलाह दी। आखिर में, 1938 में कांग्रेस के अधिवेशन में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने इसे देश के "झण्डा गीत " की स्वीकृति दे दी। यह ऐतिहासिक अधिवेशन हरिपुरा में हुआ था। नेताजी ने झण्डारोहण किया और वहाँ मौजूद करीब पाँच हजार लोगों ने श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' द्वारा रचे झण्डा गीत को एक सुर में गाया।

प्रश्न-34 पार्षद जी ने स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होने के कारण क्या-क्या कष्ट सहन किये।

उत्तर - स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होने के कारण पार्षद जी को अनेक कष्ट सहन करने पड़े। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण पार्षद जी को रानी अशोधर के महल से 21 अगस्त, 1926 को गिरफ्तार किया गया। जिला कलेक्टर द्वारा उन्हें दुर्दान्त क्रान्तिकारी घोषित करके केन्द्रीय कारागार आगरा भेज दिया गया। इसके बाद 1924 में एक असामाजिक व्यक्ति पर व्यंग्य रचना के लिए आपके ऊपर 500 रुपये का जुर्माना हुआ। 1930 में नमक आन्दोलन के सिलसिले में पुनः गिरफ्तार हुये और कानपुर जेल में रखे गये। पार्षद जी सतत स्वतन्त्रता सेनानी रहे और 1932 में तथा 1942 में फरार भी रहे। 1944 में आप पुनः गिरफ्तार हुये और जेल भेज दिये गये। इस तरह आठ बार में कुल छः वर्षों तक राजनैतिक बन्दी रहे।

प्रश्न-35 श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित 'चेतक की वीरता' कविता का सार लिखिए।

उत्तर - 'चेतक की वीरता' कविता 'हल्दीघाटी' (महाकाव्य) के 13 वें सर्ग से ली गई है। इस सर्ग में कवि ने मुगल और राजपूत एवं भील सेना के बीच हुए हल्दीघाटी के घमासान युद्ध एवं चेतक की वीरता का वर्णन किया है। राणा प्रताप के प्रिय अश्व चेतक की वीरता का गुणगान भी मार्मिक रूप से किया गया है। चेतक की वीरता का वर्णन करता हुआ कवि कह उठता है-

“बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया गया फिर ठहर गया।
विकराल ब्रज-मय बादल-सा
अरि की सेना पर घहर गया।।”

चारों ओर मार-काट मची थी। राणा प्रताप उस कुल कलंक मानसिंह को खोज रहा था। वह उसे एक हाथी पर सवार दिखाई पड़ा। राणा ने चेतक का मुख उधर मोड़ दिया। शत्रु सेना के सिर काटता हुआ राणा मानसिंह के हाथी पर पहुँच गया और भाले से वार किया। संध्या हो चली थी। युद्ध भूमि में चारों ओर लाशें बिखरी पड़ी थी। सूरज ने अपनी रुलाई रोकने के लिए अपना मुँह छिपा लिया। सावन के महीने की यह काली रात बादलों के समान रो रही थी। महाराणा प्रताप की तलवार और मुकुट चमक रहा था, उस ओर शत्रु सेना बढ़ती जाती थी। राणा बुरी तरह घायल हो चुके थे। ऐसे में वीर झाला जी ने राणा का मुकुट अपने सिर पर रख लिया और राणा युद्ध से हट जाने के लिए कहा। झाला सेनापति राणा के स्थान पर युद्ध करने लगा और चेतक राणा को लेकर सुरक्षित स्थान के लिए चल पड़ा। बीच में उफनती नदी थी। राणा पार जाने की सोच रहा ही था कि चेतक उस पार पहुँच गया था। शक्तिसिंह भी युद्ध के लिए आया था। राणा को देखकर उसका प्रेम जाग उठा। उसने देखा दो सिपाही राणा का पीछा कर रहे हैं, उसने तत्काल दोनों को मार गिराया और राणा की ओर बढ़ा। राणा ने उस पर तलवार तान दी, लेकिन शक्तिसिंह की आँखों से प्रेमाश्रु बह रहे थे। इतने में घायल चेतक दोनों के बीच गिर पड़ा। चेतक की मृत्यु पर राणा चीत्कार उठे।

प्रश्न-36 'राणा की तलवार' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - 'राणा की तलवार' शीर्षक कविता कवि श्यामनारायण पाण्डे द्वारा विरचित महाकाव्य 'हल्दीघाटी' के द्वादस सर्ग से ली गई है।

इस सर्ग में कवि ने हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध का चित्रण किया है। मुगल सेना और संगर सेना में भीषण युद्ध छिड़ गया। युद्ध की भीषणता को कवि ने प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है। भगवान कलिंग को प्रणाम कर राणा प्रताप शत्रु दल से लोहा लेने निकल पड़ा। राणा अपने घोड़े चेतक पर सवार था। जिधर से राणा गुजर जाता था वहाँ उसकी जय-जयकार के गगन भेदी नारे गूँज उठते थे। राणा के आते ही युद्ध आरम्भ हो गया और युद्ध की धरती लाशों से पटने लगी। राणा के ताप से अरि- दल में हाहाकार मच गया वे भेड़ों की तरह भागने

लगे। वे भयभीत होकर आपस में कहते जाते थे भाग लो और पीछे मुड़कर मत देखना। भीलों के तीरों की बौछारें उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। उस समय बनास नदी चढ़ी हुई थी। शत्रु सेना के सैनिक डरकर उसमें कूद पड़े। कुछ डूब गए कुछ पार लगे। अपनी सेना की दुर्गत देख मानसिंह ने तोपों का मुख मेवाड़ की ओर करा दिया। विकराल गरजती तोपों ने राणा की सेना को भून कर रख दिया। जो राजपूत बच गए थे, वे निरुपाय होकर राणा का मुख तकने लगे। तब राणा ने क्रोध में भरकर अपनी सेना को तोपों का मुँह मोड़ देने का आदेश दिया। राणा के महावीरों ने तोप का मुँह भी फेर दिया, लेकिन वे युद्ध जीत न सके। राणा किसी प्रकार बच निकला ताकि अगले युद्ध की तैयार कर सके। इतिहास में मानसिंह का नाम कुल-कलंक के रूप में जाना जाता है। जिसने अपनी निष्ठा दिखाने के लिए अपने कुल और जन्मभूमि पर तोपें चला दी थी।

प्रश्न-37 'उठो धरा के अमर सपूतों' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - 'उठो धरा के अमर सपूतों' रचना प्रसिद्ध कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा रचित है। इस कविता में उन्होंने भारत के बेटों को जाग्रत करते हुए कहा था कि हे भारत माता के अमर सपूतों अब पुनः नया निर्माण करने का समय आ गया है। गुलामी से मुक्त हर एक व्यक्ति के जीवन में फिर से एक नई चेतना, नये प्राण भरने का काम आपको करना है। अब तो हर रोज नई सुबह सूरज की नई किरण हमारे लिए नयी बात और नया प्रकाश लेकर आ रही है। अब तो हर एक के मन में नयी उमंग और तरंग है।

आजादी की इस नयी सुबह की साँस के साथ ही सबकी आशापूर्ण करनी है। इन मुरझायें फूलों में नयी जान भरनी है। आजादी की इस स्फूर्ति से भरी सुबह से सब खुश हैं। डालियों पर बैठे हुए पक्षी भी गीत गा रहे हैं। लगता है जैसे उन्हें भी नया स्वर मिला हो। बाग में चारों ओर भौरों का गुंजारव सुनाई पड़ता है। इस अमर धरा के हे अमर सपूतों आजादी के बाद देश में नया युग आया है। इस नये युग रूपी वीणा में तुम नया राग और नया गीत भरके कुछ नया निर्माण करो।

आज भारत रूपी उद्यान की हर एक कली खिल रही है और सारे फूल मुस्करा रहे हैं। आजादी के सूर्य ने सारी धरती को प्रकाशित किया है। ऐसा लगता है कि धरती माता का शरीर सुनहरा हो गया हो। हे वीर सपूतों, तुम्हें अपनी मंगलमय वाणी से जग रूपी उद्यान को गुंजित करना है। यह पूरा देश सरस्वती का मंदिर है।

यहाँ की विद्याएँ ही तुम्हारी सम्पत्ति है। तुम में से प्रत्येक बालक इस शुभ विद्यामंदिर का रक्षक और पुजारी है। तुम यहाँ कोटि-कोटि ज्ञान के दीपक जलाकर नये युग का आह्वान करना है। हे अमर सपूतों इस कल्याणकारी ज्ञान के द्वारा ही तुम नये युग का निर्माण करो।

प्रश्न-38 गोपाल प्रसाद व्यास द्वारा रचित खूनी हस्ताक्षर कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर - गोपाल प्रसाद व्यास द्वारा रचित 'खूनी हस्ताक्षर' कविता नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन पर आधारित है। इन्होंने बताया कि देश की आजादी के लिए मर-मिटने वाले वीरों का खून ही खून कहलाने योग्य है। उनके अनुसार खून में जोश होता है, तो वह वास्तव में खून कहा जा सकता है। जो खून देश के काम आ सके, वही खून है। इसके विपरीत वह खून किसी काम का नहीं है।

जीवन की गति से युवक खून ही खून कहलाने योग्य है। गतिहीन खून किसी मतलब का नहीं होता है। पराधीन होकर बहने वाला खून खून नहीं, वह तो पानी है। जिस दिन सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीय जनों को बर्मा में अपने बलिदान के लिए पुकारा, उस दिन लोगों को खून का महत्व ज्ञात हुआ था। उन्होंने लोगों को पुकार करके कहा कि तुम्हें स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए बलिदान करने होंगे। अब तक तुमने पराधीनता में बहुत समय तक जीवन बिता लिया है। लेकिन अब पराधीनता को समाप्त करने के लिए तुम्हें मृत्यु स्वीकार करनी होगी। स्वतन्त्रता देवी के चरणों में वह जयमाला अर्पित की जाएगी, जिसे तुम्हारे (देशवासियों के) शीश रूपी फूलों से गूँथा जाएगा। तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि यह आजादी की लड़ाई कभी भी पैसों के आधार पर नहीं लड़ी जा सकती। यह तो सिर कटाने का सौदा है (व्यापार है)। इस सिर कटाने के सौदे को नंगे सिर ही झेलना पड़ता है। कवि सुभाषचन्द्र बोस के उद्बोधन को स्पष्ट करता है कि आजादी की यह लड़ाई कभी भी काली स्याही से नहीं लिखी जाती है। इसके लिए खून की लाल स्याही की जरूरत पड़ती है। इस स्याही को पाने के लिए युद्ध क्षेत्र में खून की नदी बहानी पड़ती है। ऐसा कहते-कहते कहने वाले सुभाषचन्द्र बोस की आँखों में खून उतर आया अर्थात् क्रोध अपनी सीमा से ऊपर बढ़ने लगा। उनका मुख लाल पड़ गया और चमकने लगा। उनके लाल वर्ण के शरीर की कान्ति दमकने लगी। सुभाषचन्द्र बोस ने घुटनों तक लम्बी बाहों को ऊपर उठाते हुए लोगों को पुकारते हुए कहा कि आप मुझे रक्त दो, इसके बदले, मैं तुम्हें भारत देश की आजादी दूंगा। ऐसा कहते ही सभा में उथल-पुथल मच गई। प्रत्येक व्यक्ति के सीने में दिल नहीं समा सके (वे सभी उत्साह से भरे थे)। परिवर्तन के नारों के स्वर से कोसों तक आए हुए सुनाई दे रहे थे। सुभाषचन्द्र बोस के आह्वान पर लोग अपना खून देने को तैयार हो गये। वहाँ सभास्थल पर लोगों के स्वर निकल पड़े कि हम खून देंगे। चारों ओर यही स्वर गूँज रहा था। युद्ध क्षेत्र में जाने के लिए अनेक युवक खड़े दीख पड़ रहे थे। सुभाष ने कहा कि इस तरह की बातें करने से कभी भी कोई मतलब पूरा नहीं होता। यह कागज लीजिए और यहाँ आकर कौन-कौन दस्तखत करता है? इस असाधारण पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपना सर्वस्व त्याग करना है अर्थात् प्राण निछावर करने के लिए तैयार रहना है। भारत माता की आजादी के लिए तुम सभी को अपना तन, मन, धन तथा जीवन का समर्पण करना है। तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि यह कोई साधारण पत्र नहीं है, यह निश्चित रूप से आजादी का आदेश भरा पत्र है। इस पत्र पर तुम्हें अपने शरीर का उजला खून गिराना है। अर्थात् आजादी के लिए खून देना होगा। इस पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए वही

आगे बढ़ कर आये, जिसमें भारतीयता का खून हो और जो अपने आप को हिन्दुस्तानी कहने में गर्व का अनुभव करता हो। इस पत्र पर खून से हस्ताक्षर करने वाला ही आगे बढ़कर आये। उसके लिए यह कागज का पत्र नहीं, यह तो कफन है। इसे प्राप्त करने के लिए वही आगे बढ़े, जो हँस-हँस कर इसे ग्रहण करने में अपना गौरव अनुभव करता हो। सभी लोग जो सभास्थल पर मौजूद थे, हुँकार भरकर कहने लगे कि हम भारत माता की आजादी के लिए खून देने को आ रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता की देवी के चरणों में हम अपना रक्त चढ़ाने के लिए तत्पर हैं, जितना चाहते हो, ले लीजिए। युवकों में साहस था। सभी युवक उस दिन साहसपूर्वक आगे ही आगे बढ़ते आ रहे थे। वे सभी अपने शरीर से चाकुओं से, छुरियों से तथा कटारों से अपना रक्त गिरा रहे थे। अर्थात् अपना सर्वस्व देने में उन्हें कोई कष्ट नहीं हो रहा था। वे आजादी की वेदी पर अपना रक्त चढ़ाने के लिए तत्पर थे। अपने शरीर के रक्त की स्याही में कलम डुबाते हुए आजादी के उस परवाने पर सभी युवकों ने हस्ताक्षर कर दिए। उस दिन आकाश में तारों ने देखा कि हिन्दुस्तानी लोग विश्वसनीय होते हैं। उस समय रणबांकुरे भारतीय वीरों ने अपने खून से नया इतिहास लिख डाला।

प्रश्न-39 कवि सोहनलाल द्विवेदी जी का जीवन और साहित्य क्या था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रस्तावना - सोहनलाल द्विवेदी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। सोहनलाल द्विवेदी हिन्दी के राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। ऊर्जा और चेतना से भरपूर रचनाओं के इस रचयिता को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया। पं. सोहनलाल द्विवेदी स्वतन्त्रता आन्दोलन युग के एक ऐसे विराट कवि थे, जिन्होंने जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृति करने, उनमें देश भक्ति की भावना भरने और नवयुवकों को देश के लिए बड़े से बड़े बलिदान के लिए प्रेरित करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी। वे पूर्णतः राष्ट्र को समर्पित कवि थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। उन्होंने एक युग-पुरुष के रूप में गाँधी का स्तवन किया। 1966 में भारत सरकार ने आपको पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था।

जीवन परिचय - सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फरवरी, 1906 में फतेहपुर, उत्तर प्रदेश के बिन्दकी नामक गाँव में हुआ। सोहनलाल द्विवेदी की शिक्षा हिन्दी में एम० ए० रही। इन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया। द्विवेदी जी हिन्दी के राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। राष्ट्रीयता से सम्बन्धित कविताएँ लिखने वालों में आपका स्थान मूर्धन्य है। महात्मा गाँधी पर आपने कई भाव पूर्ण रचनाएँ लिखी हैं, जो हिन्दी जगत में अत्यन्त लोकप्रिय हुई हैं। आपने गाँधीवाद के भावतत्त्व को वाणी देने का सार्थक प्रयास किया है तथा अहिंसात्मक क्रान्ति के विद्रोह व सुधारवाद को अत्यन्त सरल सबल और सफल ढंग से काव्य बनाकर 'जन साहित्य' बनाने के लिए उसे मर्मस्पर्शी और मनोरम बना दिया है।

गाँधीवाद से प्रेरित द्विवेदी जी बाल्यकाल से ही गाँधी जी से प्रभावित रहे। गाँधीवाद से प्रेरित उनकी यशस्वी रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि हैं। राष्ट्र धर्म उनके काव्य का

मूल मन्त्र है। राष्ट्र प्रेम से प्रेरित अपने ओजस्वी गीतों द्वारा जन-मानस में राष्ट्रीय चेतना जगाने में उन्हें जो लोकप्रियता मिली, उसी ने उन्हें जन सामान्य में 'राष्ट्रकवि' के रूप में प्रतिष्ठित किया। कविवर हरिवंश राय बच्चन ने उनके सम्बन्ध में कहा था जहाँ तक मेरी स्मृति है, जिस कवि को राष्ट्रकवि के नाम से सर्वप्रथम अभिहित किया गया था वह सोहनलाल द्विवेदी थे। अपने विद्यार्थी जीवन से ही वे राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत थे। 1930 में काशी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में महात्मा गाँधी पधारे तो युवा कवि सोहनलाल द्विवेदी ने खादी गीत से उनका अभिनन्दन किया। उनके गीत की इन पंक्तियों से उपस्थित जनसमूह रोमांचित हो उठा-

खादी के धागे- धागे में अपनेपन का अभिमान भरा। माता का इनमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा। खादी के रेशे - रेशे में अपने भाई का प्यार भरा। माँ बहनों का सत्कार भरा, बच्चों का मधुर दुलार भरा। खादी में कितने दलितों के दग्ध की दाह छिपी। कितनों की कसक कराह छिपी, कितनों की आहत आह छिपी।

यह खादी गीत जनता में इतना लोकप्रिय हुआ कि कुछ ही दिनों में देश भर में इसकी धूम मच गई।

साहित्य परिचय - आपकी रचनाएँ ओजपूर्ण एवं राष्ट्रीयता की परिचायक हैं। गाँधीवाद को अभिव्यक्ति देने के लिए आपने युगावतार, गाँधी, खादी गीत, गाँवों में किसान, दांडीयात्रा, त्रिपुरी कांग्रेस, बढ़ो अभय जय जय जय, राष्ट्रीय निशान आदि शीर्ष से लोकप्रिय रचनाओं का सृजन किया है, इसके अतिरिक्त आपने भारत देश, ध्वज, राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र नेताओं के विषय की उत्तम कोटि की कविताएँ लिखी हैं। आपने कई प्रयाण गीत लिखे हैं, जो प्रासयुक्त होने के कारण सामूहिक रूप से गाए जाते हैं।

प्रमुख रचनाएँ - भैरवी, पूजागीत, सेवाग्राम, प्रभाती, युगाधार, कुणाल, चेतना, बाँसुरी, दूधबतासा द्विवेद्वी जी गाँधीजी को अपनी प्रेरक-विभूति मानते थे। 1944 में गाँधीजी हीरक जयंती के अवसर पर उनके अभिनन्दन हेतु जो गौरव ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, उसके सम्पादन का श्रेय भी सोहनलाल द्विवेदी जी को ही प्राप्त है। यह उनकी एक चरम उपलब्धि थी। द्विवेदी जी ने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में स्वतन्त्रता आन्दोलन के कर्णधार 'युगावतार गाँधी जी' की समग्र भावना से वन्दना की है। उन्होंने अपनी प्रथम रचना भैरवी गाँधीजी को ही समर्पित की थी। उन्होंने गाँधी को महामानव का स्थान देकर उनके सन्देश को अपने काव्य का मूल विषय बनाया और उसे जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। खादी, अहिंसा और सत्याग्रह उनके काव्य का प्रेरक स्वर रहा। सोहनलाल द्विवेदी को 'युगकवि' कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी।

प्रश्न-40 कवि अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर - जीवन-परिचय - उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के प्राचीन बटेश्वर के मूल निवासी पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी मध्य प्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। वहीं शिन्दे की छावनी में 25 दिसम्बर 1924 को ब्रह्ममुहूर्त में उनकी सहधर्मिणी कृष्णा वाजपेयी से अटल

जी का जन्म हुआ था। पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापन कार्य तो करते ही थे इसके अतिरिक्त वे हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थे। पुत्र में काव्य के गुण वंशानुगत परिपाटी से प्राप्त हुए। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति "विजय पताका" पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी०ए० की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलेज) में हुई। छात्र जीवन से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एल०एल०बी० की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गये। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ- साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलतापूर्वक करते रहे। सर्वतोमुखी विकास के लिए किए गए योगदान तथा असाधारण कार्यों के लिए 2015 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

व्यक्तिगत जीवन - वाजपेयी अपने पूरे जीवन अविवाहित रहे। उन्होंने लम्बे समय से दोस्त राजकुमारी कौल और बी० एन० कौल की बेटी नमिता भट्टाचार्य को उन्होंने दत्तक पुत्री के रूप में स्वीकार किया। राजकुमारी कौल की मृत्यु वर्ष 2014 में हो चुकी है। अटल जी के साथ नमिता और उनके पति रंजन भट्टाचार्य रहते थे। वह हिन्दी में लिखते हुए एक प्रसिद्ध कवि थे। उनके प्रकाशित कार्यों में कैदी कविराय की कुण्डलियाँ शामिल हैं, जो 1975 77 आपातकाल के दौरान कैद किए गए कविताओं का संग्रह था, और अमर आग है। अपनी कविता के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा, "मेरी कविता युद्ध की घोषणा है, हारने के लिए एक निर्वासन नहीं है। यह हारने वाले सैनिक की निराशा की ड्रमबीट नहीं है, लेकिन युद्ध योद्धा की जीत होगी। यह निराशा की इच्छा नहीं है लेकिन जीत का हलचल चिल्लाओ।"

कवि के रूप में - अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। मेरी इक्यावन कविताएँ अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले हैं। उके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने-माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ीबोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रंगों में काव्य रक्त-रस अनवरत घूमता रहा है। उनकी सर्व प्रथम कविता ताजमहल थी। इसमें श्रृंगार रस के प्रेम प्रसून न चढ़ाकर "एक शहंशाह ने बनवा के हँसी ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक" की तरह उनका भी ध्यान ताजमहल के कारीगरों के शोषण पर ही गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता। अटल जी ने किशोर वय में ही एक अद्भुत कविता लिखी थी- "हिन्दू तन-मन हिन्दू जीवन, रंग-रंग हिन्दू मेरा परिचय", जिससे यह पता चलता है कि बचपन से ही उनका रुझान देश हित की तरफ था।

प्रमुख रचनाएँ - उनकी कुछ प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं-

रग-रग हिन्दू मेरा परिचय, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुण्डलियाँ, संसद में तीन दशक अमर आग है, कुछ लेख : कुछ भाषण सेक्युलर वाद, राजनीति की रपटीली राहें, बिन्दु बिन्दु विचार, मेरी इक्यावन कविताएँ इत्यादि।

राजनीति के साथ-साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता आद्योपान्त प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी। विख्यात गज़ल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला था।

पुरस्कार-

1962 -पद्म विभूषण

1963 -डी लिट (कानपुर विश्वविद्यालय)

1964 - लोकमान्य तिलक पुरस्कार

1964 -श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार

1964 -भारत रत्न पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार

2015 -डी लिट (मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय) जिया लाल बैरवा (देवली)

2015 - 'फ्रेंड्स ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन वार अवॉर्ड', (बांग्लादेश सरकार द्वारा प्रदत्त)

2015 -भारत रत्न से सम्मानित

मृत्यु - अटल बिहारी वाजपेयी जी को 2006 में दिल का एक दौरा पड़ा था, जिसके बाद वह बोलने में असक्षम हो गए थे। उन्हें 11 जून, 2018 में किडनी में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था, अगस्त, 2018 को शाम 05:05 बजे उनकी मृत्यु हो गयी।

अटल बिहारी वाजपेयी ने लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य (पत्र) और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। वे जीवन भर भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे। श्री वाजपेयी प्रधानमन्त्री पद पर पहुँचने वाले मध्य प्रदेश के प्रथम व्यक्ति थे।

प्रश्न-41 उनकी याद करें कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर - 'उनकी याद करें' कविता राष्ट्रीय चेतना के कवि अटल बिहारी वाजपेयी जी द्वारा रचित है। इस कविता में अटल जी ने उन वीरों, शहीदों, स्वतन्त्रता सेनानियों, क्रान्तिकारियों के बलिदान को याद किया है, जिन्होंने राष्ट्र धर्म की बलिवेदी पर हँसते-हँसते स्वयं को न्यौछावर कर दिया था। अटल जी उन वीरों को याद करते हैं जिन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए अनेकानेक कष्ट सहन किए। वे बरसों जेल में सड़ते हुए, खेल-खेल में फाँसी पर चढ़ गए काले पानी की कठिन सजा काटी, अत्याचारी अंग्रेजों की मनमानी सहन की जिन्होंने स्वयं

को कोल्हू का बैल बन कर तेल निकाला अर्थात् अंग्रेजों को जुल्म सहन करने वाले वीर सावरकर जैसे बलिदानों को हमें सदैव रखना चाहिए। हमें गुलामी के समय को याद करना होगा कि किस प्रकार शासन बहरा था अर्थात् जनता की पीड़ा भरी पुकार उसके कानों तक नहीं पहुँचती थी, बमों की आवाज से ही उनके आसन डरते थे। हमें भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के बलिदान को सदैव याद रखना चाहिए जो फाँसी के फंदे पर चढ़ गए लेकिन अन्याय नहीं सहन किया। कवि आज के समाज को उन वीर महापुरुषों की याद दिलाकर कहना चाहता है कि हमें अन्यायी से लड़ना होगा, हमें दया की भीख नहीं माँगनी, क्षमा याचना नहीं करनी है, वरन् अन्यायी का मुकाबला करना होगा। इसके लिए हमें अपने देश के शहीदों को याद करना चाहिए। इस प्रकार अटल जी जन चेतना और राष्ट्र चेतना को जाग्रत करना चाहते हैं।

प्रश्न- 42 कंठ तेरे हैं अनेकों; स्वर तुम्हारा एक है,

स्वर तुम्हारे पूज्यपादों में भी मेरा एक है।

कंठ सारे एक होकर, गान तेरा ही करें,

भू- जगत् की पूज्यमाता, कष्ट-दुख सब हरे।

'माँ तुम्हारे शीश अगणित, एक सिर मेरा है,

चरणकमलों में तेरे माँ एक चेहरा भी है

सैकड़ों मस्तक चढ़े माँ में भी उनमें एक हूँ,

उत्तर - शब्दार्थ = पूज्य चरण। भू जगत् = पृथ्वी और संसार अगणित = असंख्य।

सन्दर्भ - प्रस्तुत काव्यांश कवि डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा रचित 'मातृ वन्दना' शीर्षक कविता से ली गई है। यह इनके 'मातृभूमि के लिए' संग्रह से संकलित है।

प्रसंग - यहाँ कवि ने मातृभूमि के प्रति नमन करते हुए बताया है कि उनके अनेक भक्तों में से वह भी भक्त है और मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करना चाहते हैं।

व्याख्या - कवि कहता है कि हे मातृभूमि ! तेरे अनेक कण्ठ हैं लेकिन उन सबका स्वर एक है। तुम्हारे पूजनीय चरणों की वन्दना में गाए गीतों में मेरा भी स्वर समाहित है। सारे कण्ठ एक होकर तेरा गुणगान करते हैं, तेरा सम्मान करते हैं, स्तुति गाते हैं। तुम सारी धरती और संसार की पूज्य माता हो, जो सबके कष्टों और दुःखों को हरने वाली हो। कवि कहता है कि हे माता! तुम्हारे समक्ष झुकने वाले अनेक शीशों में एक शीश मेरा भी है। तेरे चरण कमलों के प्रति झुकने वाला एक चेहरा मेरा भी है। तुम्हारी रक्षा के लिए सैकड़ों मस्तक बलिदान हो गए, उनमें एक सिर मेरा भी है।

काव्यगत सौन्दर्य -

1. यहाँ कवि की मातृ भूमि के प्रति समर्पण का भाव लक्षित होता है।
2. भाषा - ओजमयी, प्रवाहयुक्त, खड़ी बोली।
3. शैली - वर्णनात्मक।

4. रस - वीर रस ।

5. अलंकार - रूपक, अनुप्रास।

प्रश्न-43 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत का आधार क्या था?

उत्तर - प्रदीप हिन्दी साहित्य जगत् और हिन्दी फिल्म जगत् के एक अति सुदृढ़ रचनाकार रहे। कवि प्रदीप 'ऐ मेरे वतन के लोगों' सरीखे देशभक्ति गीतों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 1962 में 'भारत-चीन युद्ध' के दौरान शहीद हुए सैनिकों की श्रद्धांजलि में ये गीत लिखा था। 'भारत रत्न' से सम्मानित स्वर कोकिला लता मंगेशकर द्वारा गाए इस गीत का तत्कालीन प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में 26 जनवरी 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान से सीधा प्रसारण किया गया था। यूँ तो कवि प्रदीप ने प्रेम के हर रूप और हर रस को शब्दों में उतारा, लेकिन वीर रस और देश भक्ति के उनके गीतों की बात ही कुछ अनोखी थी।

“ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी...

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।”

ये वो बोल हैं जिन्हें सुनकर शहीदों की कुर्बानी का अहसास हृदय की गहराई में उतर जाता है और बरबस आँखों से आँसू बहने लगते हैं। हिन्दी फिल्मों के निराले एवं देशभक्ति के अमर गीतकार कवि प्रदीप की कलम की कशिश और आकर्षण कुछ ऐसा ही है। आम जन ही नहीं बल्कि भारत के पहले प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू भी इस गीत को सुनकर भाव-विभोर हो गए थे और अपने आँसू नहीं रोक पाए थे। कवि प्रदीप ने प्रेम के हर रूप और रस को अपने गीतों में पिरोया है, लेकिन देशप्रेम की भावना के गीतों के लिए उन्हें विशेष रूप से याद किया जाता है।

प्रश्न-44 'यह देश है वीर जवानों का' गीत का सारांश लिखिए।

उत्तर - यह देश है वीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों को हिन्दी बॉलीवुड फ़िल्म 'नया दौर' से लिया गया है। यह गाना सन् 1957 में रिलीज किया गया था। गाने को गायक मोहम्मद रफी जी ने गाया था। जो कि गायकों में बहुत श्रेष्ठ माने जाते हैं। बहुत सारे गाने पर इनको अवॉर्ड भी मिले हैं। गाने को म्यूजिक डायरेक्टर ओपी0 नैय्यर ने म्यूजिक कंपोज किया है और लेखक साहिर लुधियानवी के द्वारा लिखा गया है। इस गाने को देशभक्ति गाने में सबसे अच्छा और बहुत ही चर्चित गाना माना जाता है। यह देश वीर जवानों, बाँके और मस्त जवानों का देश है। इस देश की कोई तुलना नहीं कर सकता। यह देश पूरी दुनिया में आभूषण के समान है। यहाँ के वीरों युवाओं की छातियाँ चौड़ी और शकलें हीरों के समान हैं। अर्थात् यहाँ के युवा सुन्दर और मजबूत कदकाठी वाले हैं। यहाँ प्रेमी मस्ती में प्यार के गीत सुनाते हैं और अपनी ही मस्ती में झूमते रहते हैं। यहाँ पेड़ों पर झूलों की कतारें हैं और राहों में फूलों की पंक्तियाँ सजी रहती हैं। यहाँ सावन युवतियाँ की हँसी में सुनाई पड़ता है, जब वह

अपनी मस्ती में झूला झूलती हुई खिलखिलाती हैं और उनके गालों पर हँसी की कलियाँ खिलती रहती हैं। यहाँ कहीं पहलवानी के अखाड़े सजे हुए हैं, जहाँ युवा नटखट नौजवान कसरत करते हैं, तो कहीं तीर-कमानों के करतब दिखाए जाते हैं। भाव यह है कि यहाँ के युवा अस्त्र-शस्त्र की शक्ति से भरपूर हैं। यहाँ दिन-प्रतिदिन मेले सजते हैं और ढोल और ताशे की आवाजों से सारा वातावरण गूँज उठता है। सब उस धुन पर थिरक उठते हैं। सारा वातावरण हँसी-खुशी से भर जाता है। हमारे देश के युवा राग-रंग में अवश्य डूबे रहते हैं, लेकिन दुश्मन सामने आ जाए तो उसके लिए तलवार बनकर खड़े रहते हैं, यदि कोई प्रिय है तो उसके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं। यदि यहाँ का युवा युद्ध क्षेत्र में डट जाता है तो कोई भी ताकत उसे जीतने से नहीं रोक सकती, उसके कदम पीछे नहीं हटा सकती है।

प्रश्न-45 'ऐ मेरे प्यारे वतन' गीत किस पृष्ठभूमि पर आधारित है?

उत्तर - 'ऐ मेरे प्यारे वतन' शीर्षक गीत गीतकार प्रेम ध्वन द्वारा रचित है। यह गीत प्रथम बार सन् 1961 में बनी फिल्म, 'काबुलीवाला' में प्रस्तुत किया गया था। यह गीत देशभक्ति से ओत प्रोत है। यह एक ऐसा गीत है जिसे सुनकर मन राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना से सराबोर हो उठता है। इसमें एक काबुलीवाला अपने वतन से दूर है और वह अपने प्यारे वतन, वहाँ की स्मृतियाँ गीत के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसे कवि प्रेमध्वन ने अपने शब्दों द्वारा चित्रित किया है। कवि काबुलीवाला के भाव व्यक्त करता हुआ कहता है कि ऐ मेरे प्यारे देश! मेरे बिछुड़े हुए उपवन रूपी देश, तेरे ऊपर मेरा हृदय न्यौछावर है। मेरे मन में सदैव तुझ से मिलने की इच्छा बनी रहती है, तू ही मेरी इज्जत है, तू ही मेरा जीवन है। काबुलीवाला अपने देश से दूर है, लेकिन वह अपने देश की ओर से आने वाला हवाओं को भी प्रणाम करता है, उसे लगता है मानो वह उसी के आँचल में बैठा हो, वह उन सब लोगों को प्रेम करता है, जो लोग उसके देश के विषय में बात करते हैं, या जो वहाँ जाकर आए हैं। वह कहता है कि मेरे देश की सुबह और शाम बहुत प्यारी और राग-रंग से भरपूर हैं। इस गीत में गीतकार काबुलीवाला के माध्यम से अपने देश के सुखद वातावरण और उसके प्रति लगाव का वर्णन करता है।

प्रश्न-46 "सर हिमालय का हमने न झुकने दिया।" इस पंक्ति का क्या भाव है?

उत्तर - "सर हिमालय का हमने न झुकने दिया" इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान सम्मान का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर ही लड़ा गया था। भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण गवाँकर देश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा। भारत के सैनिक हर पल देश की रक्षा हेतु बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। उनके साहस की अमर गाथा से हिमालय की पहाड़ियाँ आज भी गुंजायमान हैं।

प्रश्न-47 "कर चले हम फिदा जानोतन साथियों" गीत का प्रतिपाद्य / सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों न गवाना पड़े। सैनिक चाहता है कि उसके बलिदान के बाद देश की रक्षा के लिए सैनिकों की कमी नहीं होनी चाहिए। दुश्मन कभी भी उसके द्वारा खींची गई खून की लक्ष्मण रेखा पार ना कर पाए इस उम्मीद से वो देश की रक्षा का भार देशवासियों पर छोड़ कर जा रहा है। सैनिक कहता है, कि देश पर जान न्योछावर करने के मौके बहुत कम आते हैं। ये क्रम टूटना नहीं चाहिए।

प्रश्न-48 गीतकार राजेन्द्र कृष्ण के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर - जीवन परिचय - हिन्दी सिनेमा के एक प्रसिद्ध गीतकार राजेन्द्र कृष्ण का जन्म 6 जून, 1919 को पाकिस्तान के ज़िला गुजरात के जलालपुर जट्टन नामक गाँव में एक दुग्गल परिवार में हुआ था। जब वह आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे तब उन्हें कविता की ओर आकर्षित किया गया था। उन्होंने शिमला में नगरपालिका के कार्यालय में 1942 तक क्लर्क के रूप में काम किया था। उस अवधि के दौरान उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी लेखकों को बड़े पैमाने पर पढ़ा और कविता लिखी उन्होंने फिराक गोरखपुरी और अहसान डैनीज के उर्दू कविता, पेंट और निरला की हिन्दी कविताओं के लिए अपनी ऋणी व्यक्त की। उन दिनों दिल्ली -पंजाब के समाचार पत्रों ने विशेष पूरक कार्यक्रमों को जन्म दिया और कृष्ण जन्माष्टमी को चिह्नित करने के लिए कविता प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें उन्होंने नियमित रूप से भाग लिया।

फिल्मी कैरियर की शुरुआत -1940 के दशक के मध्य में कृष्णन एक पटकथा लेखक बनने के लिए मुम्बई गए। 1947 में पहली बार जनता नामक फिल्म की पटकथा लिखी और उसी वर्ष एक और फिल्म जंजीर में गीत लिखने का मौका मिला गया। जंजीर का कोई गीत नेट (अंतर्जाल) पर उपलब्ध नहीं है। उसके संगीत निर्देशक कृष्ण दयाल थे और गीत पंडित फानी, पंडित गाफिल, लालचंद बिस्मिल और राजेन्द्र कृष्ण ने लिखें। 1948 के शुरू होते ही महात्मा गांधी की हत्या के बाद 'सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो बापू की ये अमर कहानी' से उनका नाम घर-आंगन में गूँजने लगा। यह गीत मोहम्मद रफी ने गाया था और इसकी धुन उस जमाने के प्रख्यात संगीत निर्देशक हुस्नलाल भगताराम ने बनाई थी। उसी वर्ष आज की रात के गीतों से मशहूर हुए। आज की रात में उन्होंने सामाजिक यथार्थ को अपने गीत का विषय बनाते हुए लिखा 'क्या जाने अमीरी जो गरीबी का मजा है दौलत उन्हें दी है तो हमें सब्र दिया है। स्वर मीना कपूर का है और इसकी धुन हुस्नलाल भगताराम ने बनाई हैं यह किसी गजल का मतला

भी हो सकता है और किसी गीत का मुखड़ा भी लेकिन अपने गर्भ में यह कबीर के इस दोहे का रौशन बीज छुपाए हुए हैं 'गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान जब आए संतोषधन सब धन धूरि समान।' इसी फिल्म में सुरैया की आवाज में राजेन्द्र कृष्ण का एक और गीत मशहूर हुआ 'क्यूं ले चला है ऐ दिल मुझको प्यार की गली में हो। जी०एम० दुरानी की पुरदर्द आवाज में राजेन्द्र का यह गीत भी मकबूल हुआ।

गीतों का सफ़र - 'प्यार की शमा को तकदीर बुझाती क्यूं है किसी बर्बाद - मोहब्बत को सताती क्यूं है और 1948 में बनी फ़िल्म प्यार की जीत में कमर जलालावादी और राजेन्द्र कृष्ण के गीत थे। राजेन्द्र का यह गीत बहुत मकबूल हुआ 'तेरे नैनो ने चोरी किया मेरा छोटा सा जिया परदेसिया। 1948 में 'बापू की यह अमर कहानी' इस कदर मशहूर और मकबूल हो गया था कि 1949 की एक फ़िल्म का नाम ही अमर कहानी रख दिया गया और उसमें गीत लिखने की दावत राजेन्द्र कृष्ण को ही दी गई। सुरैया की आवाज में इस फ़िल्म का यह गीत बहुत मकबूल हुआ 'दीवाली की रात पिया घर आने वाले हैं सजन घर आने वाले हैं। इसकी धुन हुस्नलाल भगताराम ने बनाई थी। इस फ़िल्म के और भी कई गीत मकबूल हुए; उनमें गीता दत्त की गाई एक गजल भी थी जिसका मतला इस तरह था, 'ये कैसी दिल्लगी है कहां का ये प्यार है कुछ ऐतबार भी नहीं कुछ ऐतबार है।' सुरैया की आवाज में राजेन्द्र का यह गीत भी बहुत पसन्द किया गया 'उमंगों पर जवानी छा गई अब तो चले आओ तुम्हारी याद फिर तड़पा गई तब तो चले आ।' 1949 में लाहौर और बड़ी बहन के 'चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है, 'चले जाना नहीं' जैसे सुपरहिट गानों के साथ राजेन्द्र जी अग्रिम पंक्ति के गीतकार बन गए। लाहौर में संगीत दिया था प्रख्यात निर्देशक श्यामसुन्दर ने और राजेन्द्र कृष्ण का यह गीत बेहद मकबूल हुआ 'बहारें फिर भी आएंगी मगर हम तुम जुदा होंगे घटाएँ फिर भी छाएंगी मगर हम तुम जुदा होंगे। एक गीतकार के रूप में वह दीनानाथ मधोक और कमर जलालाबादी के नजदीक पड़ते हैं जो मन की भावनाओं को सीधे - सच्चे शब्दों में और सादा अंदाज़ में कहने में यकीन रखते हैं और कोरी भावनाओं को कविता का साज-सिंंगार पहनाने की चिंता नहीं करते। श्रोता तक उनकी कविता सुनते-सुनते ही संवेदित हो जाती है, उसे समझने और सराहने के लिए उसे कोशिश नहीं करनी पड़ती, कसरत को तो सवाल ही नहीं पैदा होता। बड़ी बहन के गीतों को लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि बड़ी बहन के निर्माता ने खुश होकर गीतकार राजेन्द्र कृष्ण को एक ऑस्टिन कार भेंट की और गीत लिखने के लिए एक हजार रु० माहवार पर नौकर रख लिया। 1949 में आसूदहाल लोग ही ऑस्टिन कार का सपना देखते थे और एक हजार प्रति माह की तनख्वाह अच्छी-खासी रकम हुआ करती थी। फिर तो राजेन्द्र जी की गाड़ी चल पड़ी अलबेला, अनारकली, आज़ाद, भाई-भाई, देख कबीरा रोया, छाया, पतंग, ब्लफ मास्टर, भरोसा, पूजा के फूल, खानदान आदि फ़िल्मों के लिए गाने लिखे और मशहूर हुए, इसके अलावा राजेन्द्र जी तमिल बहुत अच्छे तरह से जानते थे सो 18 तमिल फ़िल्मों के लिए पटकथा और गाने भी लिखें।

लता-रामचंद्र - राजेन्द्र दरअसल लता, सी० रामचन्द्र और राजेन्द्र कृष्ण की एक तिकड़ी बनती है और ये तीनों जब भी एक जगह जमा होते हैं तो एक से बढ़कर एक रसवंती रचनाएँ अस्तित्व में आती हैं। लता रामचन्द्र और राजेन्द्र की तिकड़ी ने अनारकली में बहुत अच्छा संगीत दिया है। इस फ़िल्म के गीत 'मोहब्बत ऐसी धड़कन है जो समझाई नहीं जाती', मोहब्बत में दिल का धड़कना तो आम है, हिन्दी-उर्दू शायरी ऐसी धड़कनों से भरी पड़ी है; लेकिन यहाँ तो उसे धड़कन ही बना दिया गया है। यह रूपक अलंकार का चमत्कार है जो इस सीधे-सादे बयान को कविता के रूपहले रूमाल में लपेटकर एक नई आभा दे रहा है।

पुरस्कार - राजेन्द्र कृष्ण ने फ़िल्म खानदान (1965) में "तुम्ही मेरे मन्दिर, तुम्हीं मेरी पूजा" के लिए सर्वश्रेष्ठ गीतकार के लिए फ़िल्मफेयर पुरस्कार जीता था।

योगदान - 1966 की फ़िल्म नींद हमारी ख्वाब तुम्हारे में आशा भोंसले की आवाज़ में राजेन्द्र का यह गीत बेहद लोकप्रिय हुआ कोई शिकवा भी नहीं कोई शिकायत भी नहीं और तुम्हें हमसे वो पहली सी मोहब्बत भी नहीं।' अब राजेन्द्र को फिल्मों का मिलना कम हो गया था लेकिन जब भी मौका मिलता था वह कोई न कोई मकबूल गीत रच देते थे और सुर्खियों में आ जाते थे। 1970 की फ़िल्म गोपी में उनका लिखा यह गीत देखिए; "सूख के सब साथी दुःख का न कोय मेरे राम मेरे राम तेरा ना है सांचा दूजा न कोय। गोपी में महेंद्र कपूर का भी एक सदाबहार गीत है जो आज भी सुनने को मिल जाता है, "रामचन्द्र कह गए सिया से ऐसा कलजुग आएगा हंस चुगेगा दाना- दुनका कौवा मोती खाएगा।" अब राजेन्द्र पचास के लपेटे में थे लेकिन उम्र न उनके तेवरों पर जरा भी असर नहीं छोड़ा था। पर अब गीतकारों की नई खेप आ गई थी और उन्हें मिलने वाले काम में कमी आ गई थी। वह इसकी परवा भी कहां करते थे? घुड़दौड़ में 46 लाख का करमुक्त जैकपॉट जीतकर वह पहले ही फ़िल्म उद्योग के सबसे धनी लेखक कहलाने लगे थे। अपने परम मित्र संतोषी की तरह वह ऐयाशी से खर्च करने वाले शख्स न थे बल्कि पैसे का विवेकशील उपयोग करने में विश्वास करते थे। लेकिन वह अन्तिम दिनों तक सक्रिय रहने में भी विश्वास करते थे इसलिए जब भी मौका मिलता था, काम से इनकार नहीं करते थे। कुछ न कुछ काम उन्हें आखिरी दम तक मिलता रहा। इसके अलावा वो तमिल भाषा पर भी हिन्दी जैसा ही अधिकार रखते थे और तमिल फ़िल्मों के लिए भी उतने ही मशहूर थे।

निधन - हिन्दी के कम पाठक जानते हैं कि राजेन्द्र कृष्ण ने एवीएम स्टूडियो के लिए 18 फ़िल्में तमिल में लिखीं थीं। उनकी अंतिम फ़िल्म अल्ला रक्खा 1986 में आई जबकि दो ही साल बाद 23 सितम्बर, 1987 को बम्बई में उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु से पहले वह आग का दरिया के लिए गीत लिख रहे थे। यह फ़िल्म उनकी मृत्यु के दो साल बाद 1990 में प्रदर्शित की गई। अनुराधा पौडवाल का गीत 'रिश्ते में मोहब्बत का संसार हमारा था' आम तौर पर उनका आखिरी गीत माना जाता है।

प्रश्न-49 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' गीत का मुख्य भाव क्या है?

उत्तर - 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' शीर्षक गीत गीतकार इन्दीवर द्वारा रचित है। यह गीत सन् 1971 ई0 में निर्मित फिल्म 'पूरब और पश्चिम' में फिल्माया गया है। इस गीत में कवि ने भारतीय गौरव और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र उन्नत होने पर गर्व किया है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश से प्रेम और उस पर अभिमान होना चाहिए। भारत ही वह देश है, जिसने दुनिया को शून्य दिया और गणित तथा सांख्यिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ाया, भारत ही ने पूरी दुनिया को नक्षत्रों-तारों की गणना करना सिखाया। यदि भारत दशमलव न देता तो संसार की गति और दूरी मापने की सीख कहाँ से मिलती। भारत से मिली शिक्षा के कारण ही संसार चाँद पर जा सका है। यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि यहाँ सभ्यता पहले जन्मी या कला। भारत में इन दोनों का प्रभाव आरम्भ से दिखाई पड़ता है। भारत ही वह देश है, जिसके पीछे-पीछे दुनिया चली अथवा अनुकरण किया। कवि कहता है कि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मेरो देश भारत सदैव आगे बढ़ता रहे और विकसित होता रहे। इस गीत में देश के प्रति कवि की निष्ठा और प्रेम की भावना का निरूपण हुआ है। सर्वविदित है कि शून्य दशमलव, खगोल विद्या, सांख्यिकी, गणित की भाषा सबसे पहले भारत ने ही संसार को सिखाई थी। सभ्यता और कला सबसे पहले भारत में ही विकसित हुई थी। कवि अतीत के गौरव का गुणगान करके अपने देश की प्रतिष्ठा को सर्वश्रेष्ठ बनाए रखना चाहता है।

प्रश्न-50 गीतकार प्रसून जोशी के जीवन और साहित्य का चित्रण कीजिए।

उत्तर - प्रस्तावना - प्रसून जोशी हिन्दी कवि, लेखक, पटकथा लेखक और भारतीय सिनेमा के गीतकार हैं। वे विज्ञापन जगत् की गतिविधियों से भी जुड़े हैं और अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञापन कम्पनी 'मैकएन इरिक्सन' में कार्यकारी अध्यक्ष हैं। फिल्म 'तारे ज़मीन पर' के गाने 'माँ.....' के लिए उन्हें 'राष्ट्रीय पुरस्कार' भी मिल चुका है। अब सेंसर बोर्ड के चेयरमैन हैं।

प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा-प्रसून का जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के दन्या गाँव में 19 सितम्बर, 1968 को हुआ था। उनके पिता का नाम देवेन्द्र कुमार जोशी और माता का नाम सुषमा जोशी है। उनका बचपन एवं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा टिहरी, गोपेश्वर, रुद्रप्रयाग, चमोली, एवं नरेन्द्रनगर में हुई,

कार्यक्षेत्र - उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। दिल्ली 6, 'तारे जमीन पर', 'रंग दे बसंती', 'हम तुम' और 'फना' जैसी फिल्मों के लिए कई सुपरहिट गाने लिखे हैं। फिल्म 'लज्जा', 'आँखे', 'क्योंकि' में संगीत दिया है। 'ठण्डा मतलब कोका कोला' एवं 'बार्बर शॉप-ए जा बाल कटा ला' जैसे प्रचलित विज्ञापनों के कारण उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली।

सम्मान / पुरस्कार -

'शैलेंद्र सम्मान।

सुपरहिट फिल्म 'तारे ज़मीन पर' के गाने 'माँ.....' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार।

सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार ("माँ" के लिए 2007 और "चाँद सिफ़ारिश " के लिए 2008)

प्रसून जोशी हिन्दी कवि, लेखक, पटकथा लेखक और भारतीय सिनेमा के गीतकार हैं। वे विज्ञापन जगत् की गतिविधियों से भी जुड़े हैं और अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञापन कम्पनी 'मैकऐन इरिक्सन' में कार्यकारी अध्यक्ष हैं। फिल्म 'तारे ज़मीन पर' के गाने 'माँ.....' के लिए उन्हें 'राष्ट्रीय पुरस्कार' भी मिल चुका है। अब सेंसर बोर्ड के चेयरमैन हैं।

प्रसून का जन्म उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के दन्या गाँव में 19 सितम्बर, 1968 को हुआ था। उनके पिता का नाम देवेन्द्र कुमार जोशी और माता का नाम सुषमा जोशी है। उनका बचपन एवं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा टिहरी, गोपेश्वर, रुद्रप्रयाग, चमोली, एवं नरेन्द्रनगर में हुई, जहाँ उन्होंने एम0एससी0 और उसके बाद एम0बी0ए0 की पढ़ाई की। क्योंकि उनके पिता उत्तर प्रदेश सरकार में 'शिक्षा निदेशक' थे और उन का कार्यकाल अधिकतर इन्हीं जगहों पर रहा। प्रसून जोशी बचपन से ही प्रकृति, सृष्टि द्वारा सृजित चीजों एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति आकर्षित रहे। इसलिए लेखन उनके स्वभाव में स्वतः ही प्रवेश कर गया। बचपन में वे खुद की हस्तलिखित पत्रिका भी निकालते थे और इस प्रकार लेखन उनका शौक बना। जहाँ तक गीतों की रचना का प्रश्न है उनके माता-पिता संगीत के बहुत ज्ञाता थे। जब उन्होंने उनसे संगीत विरासत में ग्रहण किया और वे उसकी बारिकियों से वाकिफ़ हुए तो फिर वो गीतों के रचनाकार बने। बड़े होकर जब प्रसून जोशी ने व्यवसायिक शिक्षा (एमबीए) पूरी की तब उन्हें लगा कि उन्हें सृजन को दूसरे माध्यम से भी आगे बढ़ाना चाहिए। यह माध्यम विज्ञापन के अलावा दूसरा नहीं था। काम चाहे लेखन का हो या विज्ञापन का दोनों ही अपनी बात को दूसरों के दिलों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

शिक्षा - प्रसून जोशी की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड के गोपेश्वर एवं नरेन्द्रनगर में हुई। उन्होंने एम0एससी0 के बाद एम0बी0ए0 की पढ़ाई भी की।

शास्त्रीय संगीत की दीक्षा- गीतकार प्रसून के लिए गीतों से हम सब वाकिफ़ हैं, पर बहुत कम लोग जानते हैं कि वे उन्होंने उस्ताद हफीज़ अहमद खान से शास्त्रीय संगीत की दीक्षा भी ले रखी है। उनके उस्ताद उन्हें ठुमरी गायक बनाना चाहते थे। उन दिनों को याद कर प्रसून बताते हैं कि उनके रियाज़ का समय नहीं होता था, तो बाईक पर घर लौटते समय गाते हुए आते थे और उनका हेलमेट उनके लिए 'अर्कोस्टिक' का काम करता था।

कार्यक्षेत्र - उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। दिल्ली-6, 'तारे ज़मीन पर', 'रंग दे बसंती', 'हम तुम' और 'फ़ना' जैसी फ़िल्मों के लिए कई सुपरहिट गाने लिखे हैं। फिल्म 'लज्जा', 'आँखे', 'क्योंकि' में संगीत दिया है। 'ठण्डा मतलब कोका कोला' एवं 'बार्बर शॉप-ए जा बाल कटा ला' जैसे प्रचलित विज्ञापनों के कारण उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिली।

विज्ञापन - उन्होंने दिल्ली में ओगिल्वी और माथेर के साथ अपना कैरियर शुरू किया। उन्होंने वहाँ 10 साल तक काम किया और अंततः मुम्बई कार्यालय के कार्यकारी रचनात्मक निदेशक

बन गए। 2002 की शुरुआत में, वह मैककेनएरिकस न के कार्यकारी उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय रचनात्मक निदेशक के रूप में शामिल हुए। 2006 तक, वह दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रीय रचनात्मक निर्देशक थे। दिसम्बर 2006 में उन्हें मैककेन वर्ल्ड ग्रुप इंडिया के कार्यकारी अध्यक्ष और एशिया प्रशांत के लिए क्षेत्रीय रचनात्मक निदेशक पदोन्नत किया गया।

जोशी ने आमिर खान के साथ एनडीटीवी इंडिया (सच्चे दिखते हैं हम), सेफोला (मुख्य से जान हून), एलजी, मैरिको, पेफेटी (एल्पनलीबे, क्लोमेंट) के लिए विज्ञापन अभियान बनाये और कान-जीतने वाला थंडा मेटलब कोका-कोला अभियान बनाया।

फ़िल्म कैरियर - उन्होंने राजकुमार संतोषी के लज्जा के साथ फ़िल्म गीतकार के रूप में अपनी शुरुआत की, यह एक महत्वपूर्ण और व्यावसायिक सफलता थी, और इसने यश चोपड़ा के 'हम तुम' और 'फना', 'रंग दे बसंती', 'तारे ज़मीन पर', 'ब्लैक' और 'दिल्ली 6' जैसी बेहद सफल बॉलीवुड फिल्मों की शुरुआत की। रंग दे बसंती (2006) के साथ, वह एक संवाद लेखक भी बन गए।

उन्होंने 2007 में फ़िल्म फना से "चाँद सिफारिश" और 2008 में "माँ" के लिए फ़िल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ गीतकार पुरस्कार जीता था। उन्होंने 2008 में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। 'तारे ज़मीन पर' में अपने काम के लिए पहला और 2013 में 'चटगांव' के लिए दूसरा।

उन्होंने पुरस्कार विजेता 2014 फिल्म 'भाग मिलखा भाग' के लिए स्क्रिप्ट भी लिखी है।

फ़िल्म - नीरजा (2019), विश्वरूप (2014), सत्याग्रह (2013), भाग मिलखा भाग (2013), पेरिस में इश्क (2012), तेरी मेरी कहानी (2012), आरक्षण (2011), ब्रेक के बाड (2010), सिकंदर (2009), लंदन ड्रीम्स (2009), दिल्ली - 6 (2009), गजनी (2008), थोड़ा प्यार थोड़ा मैजिक (2008), तारे ज़मीन पर (2007), फना (2006), रंग दे बसंती (2006), ब्लैक (2005), रोक सको तो रोक लो (2004), फिर मिलेंगे (2004),

हम तुम (2004), आँखें (2002), क्यों? (2003), टाइम्स स्क्वायर लव (2003), लज्जा (2001), भोपाल एक्सप्रेस (1999)।

प्रश्न-51 'देश रंगीला रंगीला' गीत में गीतकार प्रसून जोशी ने क्या चित्रण किया है?

उत्तर - 'देश रंगीला रंगीला' शीर्षक गीत प्रसिद्ध कवि प्रसून जोशी द्वारा रचित है। यह गीत सन् 2006 ई0 में बनी फिल्म 'फना' का गीत है, जो काफी लोकप्रिय हुआ है। इस गीत में कवि ने देश के प्राकृतिक वातावरण का मनोहारी चित्रण किया है। भारत विविधताओं का देश है। यहाँ की बदलती ऋतुएँ, बदलते परिवेश, रीति-रिवाज, उत्सव-त्यौहार, मेलों ठेलों की मस्ती दर्शनीय है। ऐसी विविधता अन्य देशों में नहीं मिलती है। कवि ने देश की इसी विविधता के सौन्दर्य का चित्रण किया है। कवि बताता है कि मेरे देश धरती पग-पग पर अपना रंग बदल लेती है, थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही यहाँ की बोली, पानी, रीति-रिवाज सब बदल जाते हैं। यहाँ धरती धानी पगड़ी पहने हुए प्रतीत होती है, तो आकाश नीली चादर ताने हुए अपने नाना प्रकार के रंग दिखाता रहता है, जिससे नदियाँ सुनहरी और समुद्र हरा दिखाई देता है, जो देखने में बहुत

आकर्षक लगता है। कवि कहता है कि मेरा देश विभिन्न प्रकार के रंगों के सजा रंगीला देश है। प्रातः काल में यहाँ सिन्दूरी गालो वाला सूरज आकर धरती से हँसी-मजाक करता है और लज्जा से झुके खेतों पर अपनी सुनहरी पीली चादर ढक देता है। ऐसे जैसे किसी शर्मीली युवती ने पीली चूनर से अपने को ढक लिया हो। कवि कहता है कि यहाँ घूँघट में भी अनेक रंग बिखरे हैं, जो पनघट पर दिखलाई पड़ते हैं। एक से बढ़कर एक चमकीले रंग वहाँ मिलते हैं। ऐसा मेरा रंगीला देश है।

प्रश्न-52 'देश रंगीला रंगीला' गीत में कवि ने इश्क का रंग कैसा बताया है?

उत्तर - 'देश रंगीला रंगीला' गीत में कवि ने बताया है कि यहाँ इश्क का रंग बहुत गहरा है यदि एक बार चढ़ गया तो फिर कभी नहीं उतरता। प्रेम का रंग यहाँ सच्चे प्यार जैसी स्थिरता लिए हुए है, जो छलकता तो है, लेकिन बिखरता नहीं है अर्थात् प्रेम बँटता नहीं है, न ही व्यर्थ जाता है। यहाँ हर रंग की नयी अदा, शर्म है। ऐसे रंगों से युक्त मेरा देश अत्यन्त रंगीला है। यहाँ कवि ने इश्क को एक विशेष अभिव्यक्ति प्रदान की है।

प्रश्न-53 सैनिक अपनी मातृभूमि के प्रति क्या भाव रखता है?

उत्तर - "कर चले हम फिदा जानोतन साथियो" गीत में सैनिकों और भारत की भूमि को प्रेमी-प्रेमिका के रूप में दर्शाया गया है। जिस प्रकार दूल्हे को दुल्हन सबसे प्रिय होती है, उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी वह बखूबी समझता है, ठीक उसी प्रकार इस धरती रूपी दुल्हन पर सैनिक रूपी प्रेमी कभी विपत्ति सहन नहीं कर सकते। सन् 1962 के युद्ध में भारतीय सैनिकों ने बलिदान के रक्त से धरती रूपी दुल्हन की माँग भरी थी। इसी समानता के कारण भारत की धरती को दुल्हन कहा गया है।

प्रश्न-54 'मेरे देश की धरती सोना उगले गीत का प्रतिपाद्य लिखिए। '

उत्तर - लोकप्रिय देश भक्ति गीत 'मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे-मोती। यह गाना 1967 में आई फिल्म उपकार का है। देश प्रेम और देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा हर नागरिक में होता है। हिन्दी सिनेमा ने भी इस मोहब्बत और जज्बे को बखूबी अभिव्यक्त किया है। आज भी देशभक्ति के कई ऐसे गाने हैं जो लोकप्रिय हैं। बदलते वक्त के साथ इनकी लोकप्रियता में इज़ाफ़ा हुआ है। कुछ ऐसे बेशकीमती गीत हैं जो हर नागरिक को वतन के प्रति अपनी मोहब्बत का इज़हार करने के लिए अल्फ़ाज देते हैं। मनोज कुमार ने यह फिल्म पूर्व प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री के नारे 'जय जवान जय किसान' के नारे को केन्द्र में रखकर बनाई थी। इस गीत को कलमबंद किया है जाने माने गीतकार इन्दीवर ने। महेन्द्र कपूर ने अपनी दिलकश आवाज़ से इस गीत को अमर कर दिया। गीत को संगीत से सजायी है मशहूर संगीतकार जोड़ी कल्याणजी-आनंदजी ने मनोज कुमार को जिन चुनिंदा फिल्मों की वजह से भारत कुमार कहा जाता था, उनमें उपकार भी थी। मनोज कुमार ने इस

फ़िल्म को खुद लिखा, अभिनय किया और डायरेक्ट भी किया। इस गीत को बहुत ही खूबसूरती से फ़िल्माया गया है।

प्रश्न-55 महाकवि चंदबरदाई का जीवन-परिचय एवं साहित्यिक परिचय का वर्णन कीजिए।

उत्तर- जीवनपरिचय- महाकवि चंदबरदाई हिंदी साहित्य के आदिकाल के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। उनका जन्म लगभग बारहवीं शताब्दी में माना जाता है। वे दिल्ली और अजमेर के प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज चौहान के राजकवि तथा घनिष्ठ मित्र थे। चंदबरदाई का जीवन पृथ्वीराज चौहान के जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ था।

चंदबरदाई के जन्मस्थान और जन्म तिथि के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। सामान्यतः उनका संबंध लाहौर से माना जाता है। उनके पिता का नाम चंद तथा गुरु का नाम जालंधरनाथ बताया जाता है। वे वीर, स्वाभिमान और देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कवि थे।

चंदबरदाई केवल राजदरबार के कवि नहीं थे, बल्कि वे युद्धों में भी पृथ्वीराज चौहान के साथ रहे। उनकी मृत्यु के संबंध में प्रसिद्ध कथा है कि जब पृथ्वीराज चौहान को मुहम्मद गौरी ने बंदी बना लिया और उनकी आँखें फोड़ दी गईं, तब चंदबरदाई ने अपनी काव्य-कुशलता से उन्हें गौरी का स्थान बताया। पृथ्वीराज ने शब्दभेदी बाण चलाकर गौरी को मार दिया। इसके बाद चंदबरदाई और पृथ्वीराज दोनों ने आत्मबलिदान कर दिया। हालांकि इस कथा के ऐतिहासिक तथ्यों पर विद्वानों में मतभेद हैं।

साहित्यिक परिचय- चंदबरदाई की सबसे प्रसिद्ध रचना 'पृथ्वीराज रासो' है। इसे हिंदी साहित्य के आदिकाल का महत्वपूर्ण वीरकाव्य माना जाता है। इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन, युद्धों, वीरता और प्रेम का वर्णन मिलता है।

प्रमुख रचना-

पृथ्वीराज रासो

'पृथ्वीराज रासो' में पृथ्वीराज चौहान के जीवन की विभिन्न घटनाओं तथा उनके शौर्य का विस्तृत वर्णन किया गया है। काव्य में वीर रस की प्रधानता है, लेकिन शृंगार, रौद्र और करुण रस के उदाहरण भी मिलते हैं।

काव्य की प्रमुख विशेषताएँ -

(1) **वीर रस की प्रधानता-** चंदबरदाई के काव्य में युद्ध, शौर्य, साहस और पराक्रम का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

(2) **राष्ट्रीय एवं स्वाभिमान की भावना-** कवि ने अपने नायक को देश, धर्म और सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए प्रस्तुत किया है।

(3) **युद्ध-वर्णन-** युद्धों, अस्त्र-शस्त्रों, घोड़ों और सैनिकों का सजीव एवं प्रभावशाली वर्णन मिलता है।

(4) **भाषा-** 'पृथ्वीराज रासो' की भाषा को सामान्यतः पिंगल कहा जाता है। इसमें ब्रज, राजस्थानी तथा अन्य लोकभाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है।

(5) छंद-विविधता- काव्य में दोहा, चौपाई, छप्पय, कवित्त आदि अनेक छंदों का प्रयोग मिलता है।

निष्कर्ष- चंदबरदाई आदिकालीन हिंदी साहित्य के प्रमुख वीरकवि हैं। 'पृथ्वीराज रासो' के माध्यम से उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के शौर्य, पराक्रम और स्वाभिमान को साहित्य में अमर कर दिया। इसलिए उन्हें हिंदी के प्रथम महत्वपूर्ण वीरकवियों में स्थान दिया जाता है।